हमारा टी सी आई एल

त्रैमासिक गृह पत्रिका – संयुक्तांक : 71–72

2015

टी. सी. आई. एल.

आपके विचार

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका बहुत ही ज्ञानवर्धक है तथा हिंदी को बढ़ावा देने के हमारे प्रयासों में सहायक है। सभी लेख अत्यन्त रोचक व ज्ञानवर्धक है।

मोहन मुरारी
राजभाषा प्रभारी
इंडियन एयर फोर्स, नई दिल्ली

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानी, कविता आदि ज्ञानवर्धक एंव रुचिकर है।

हीरा वल्लभ शर्मा
वरि. प्रबंधक (सेल)

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, अत्यंत ज्ञानवर्धक एंव रुचिकर है।

पी सी आहूजा
वरिष्ठ प्रंबधक(रा.भा.का.)
वाप्कोस लिमिटेड, नई दिल्ली

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका में सभी लेख, ज्ञानवर्धक व काफी सराहनीय है।

दीपिका रानी
सहायक प्रंबधक (राजभाषा)
भारतीय राज्य फार्म निगम लिमिटेड, नई दिल्ली

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका के इस अंक में भी विविध रचनाओं का समावेश किया गया है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियाँ, कविताएँ, ज्ञानवर्धक तथा रूचिपूर्ण है। हिंदी पंखवाड़ा के अंतर्गत आपके यहा जो आशु काव्य सृजन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है, वह सचमुच बहुत सराहनीय है।

अमित प्रकाश
उप निदेशक (राजभाषा)
दूर संचार विभाग, नई दिल्ली

हमारा टी सी आई एल

जून, 2015 (गृह पत्रिका) संयुक्तांक: 71-72

संरक्षक:
विमल वखलू
अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक

सलाहकार:
अजय कुमार गुप्ता
निदेशक (वित्त)

राजेश कपूर
निदेशक (तकनीकी)

राजीव गुप्ता
निदेशक (परियोजनाएं)

महेंद्र कुमार यादव
समूह महाप्रबंधक (मा.सं.वि.)

संपादक:
कपिल शर्मा
हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)

सहयोग:
जसविंदर कौर, वरि. अनुवादक
रेणु मणि, पर्यवेक्षक

संपर्क सूत्र:
हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)
टी सी आई एल भवन, दूसरा तल,
ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110 048
दूरभाष: 011-26202215
फैक्स: 011-26242266
ई-मेल: kapil.sharma@tcil-india.com
वेबसाइट: www.tcil- india.com

अनुक्रमणिका

अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक का संदेश	2
संपादकीय	3
ई-मेल अपराध	4-6
परियोजना प्रबंधक और सार्वजनिक सेक्टर का महत्व	7-9
संगठनात्मक प्रभाव और परियोजना जीवन चक्र	10-13
टीसीआईएल में अंतरराष्ट्रीय महिला सप्ताह का आयोजन	14
भाषा का निरीक्षण	15-16
एकलव्य (कहानी)	17-18
खुशियों के पल	19-20
काव्यधारा	21-22
मनोनिगृह की दृढ़ इच्छा शक्ति	23-24
टीसीआईएल में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन (पुरस्कृत आलेख)	25-28
टीसीआईएल में होली पर्व पर हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन	29-30
टीसीआईएल में स्वच्छता जागरूकता सप्ताह का आयोजन (पुरस्कृत आलेख)	31-32
स्वच्छ टीसीआईएल, स्वच्छ भारत	33-34
सीएसआर पर आलेख स्वच्छता के पीछे की गंदगी- क्या शर्मिंदा या गुस्सा होने से कोई फायदा है?	35-36
परिवर्तन प्रबंधन	37-39
टीसीआईएल में हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजन	40

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों को अपने हैं, टीसीआईएल प्रबंधन का इनसे सहमत होना जरूरी नहीं।

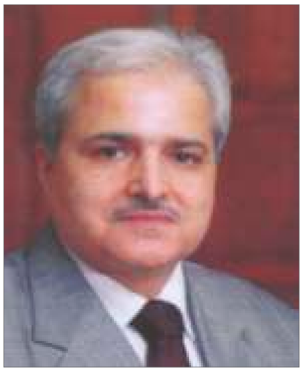

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

हमारी गृह पत्रिका 'हमारा टीसीआईएल का अंक अपने पाठकों के समक्ष रखते हुए मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हो रही है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि यह पत्रिका वर्षों से नियमित आधार पर प्रकाशित की जा रही है। गृह पत्रिका को नियमित रूप से प्रकाशित करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्वों व कर्तव्यों का पूरी निष्ठा के साथ अनुपालन करने का हम प्रयास कर रहे हैं।

राजभाषा हिंदी जहां लोगों को परस्पर जोड़ती है वहीं सामाजिक सरोकारों को भी वाणी देती है। हम हिंदी को जितना मजबूत बनाएंगे देश का सामाजिक सौहार्द उतना ही सुदृढ़ होगा। हमारा कर्तव्य है कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग अपने कार्यालयी कार्यो में अधिकाधिक करते हुए अपने संवैधानिक दायित्वों को निभाएं। विगत कुछ वर्षो में टीसीआईएल मे हिंदी में कार्य करने को लेकर कर्मचारियों ने जो इच्छाशक्ति दिखाई है, वह सराहनीय है। हिंदी में कार्य अभूर्तपूर्व रूप से बढ़ा है। किंतु अभी भी कुछ अधिकारी व कर्मचारी हिंदी में कार्य करने पर कम और राजभाषा नियमों व निदेशों की जटिलताओं पर केंद्रित हैं।

मेरा अपने इन साथियों से अनुरोध है कि संघ की राजभाषा नीति की मूल भावना को समझें जो यह कहती है कि हमें अपना समस्त कार्य हिंदी में करना है। ऐसा एकदम से करना कठिन है, पर निरंतर प्रयास के बल पर ऐसा किया जा सकता है। क्योंकि एक सच यह भी है कि यदि हमने राजभाषा नीति को इसकी मूल भावना के साथ नहीं अपनाया तो यह केवल एक औपचारिक कार्य बनकर रह जाएगा। हमें इन नियमों की मूल भावना को समझना चाहिए और इसे दिल से अपनाना चाहिए। यह ठीक है कि कई प्रकार के विघ्न इस मार्ग में आएंगे पर परस्पर तालमेल और सहयोग से उन बाधाओं को दूर किया जा सकता है।

टीसीआईएल एक परियोजना आधारित संगठन है। इसीलिए, हमारा प्रयास रहता है कि परियोजना प्रबंधन को लेकर जो भी सर्वश्रेष्ठ जानकारी व सामग्री हो, उसे अपने कर्मचारियों तक हिंदी में पहुंचाया जाए। टीसीआईएल पुस्तकालय में परियोजना प्रबंधन संबंधी पुस्तक के संस्करण हिंदी में उपलब्ध हैं। यही नहीं, संचार व सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विषय क्षेत्र से संबधित पत्रिकाएं हिंदी में उपलब्ध कराई गई हैं। हमारा टीसीआईएल का यह अंक भी इसी पर केंद्रित है। आशा करता हूँ कि हमारा टीसीआईएल का यह अंक पाठकों को पसंद आएगा।

विमल वखलू

संपादकीय

हमारा टीसीआईएल का यह अंक अपने प्रबुद्ध पाठकों को सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करना है और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में न केवल विभागीय लेख अपितु टीसीआईएल से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को भी प्राथमिकता दी जाती है।

युनिकोड और विशेषकर इंटैलिजेंट कीबोर्ड जैसी सुविधाओं के आविर्भाव के साथ हिन्दी जगत में मानो एक क्रांति सी आ गई है। अब हिन्दी में काम करने के लिए आपको कीबोर्ड में दक्षता प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि इंटैलिजेंट कीबोर्ड (इंडिक टूल) की सहायता से आप अंग्रेजी में टाइप करते हुए हिन्दी लिख सकते हैं। राजभाषा विभाग इस दिशा में निरंतर शोध एंव विकास कार्य कर रहा है और हम हिन्दी प्रभाग से जुड़े अधिकारियों का यह कर्तव्य बनता है कि इस दिशा में हो रही गतिविधियों व विकास कार्यो से कर्मचारियों को अवगत कराते रहें। टीसीआईएल का उच्च प्रबंधन सदा से ही हिन्दी में काम करने को लेकर किए जाने वाले प्रयासों को प्रोत्साहन देता रहा है और यही कारण है कि विगत कुछ वर्षो में टीसीआईएल के कार्यालयी कार्य का कायाकल्प हो गया है। अधिकारी वर्ग अब अधिक से अधिक टिप्पणियां हिन्दी में लिखते हैं। दूरसंचार विभाग और अन्य मंत्रालयों में भेजे जाने वाले पत्रों को हिन्दी में लिखे जाने के नियम का सख्ती से पालन किया जा रहा है। ऐसा न किए जाने पर प्राप्ति व प्रेषण अनुभाग ऐसे पत्रों को वापिस लौटा देता है। प्रभागों/अनुभागों ने राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में जो योगदान दिया है, वह सराहनीय है। हिन्दी भाषी कर्मचारियों ने तो अपने कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाया ही है, साथ ही अहिन्दी भाषी कर्मचारी भी इन नियमों का गंभीरता से पालन कर रहे हैं। मैं यह तो नहीं कहूंगा कि हमने राजभाषा संबंधी सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है पर यह आवश्यक कहूंगा कि कुल मिलाकर हम सही दिशा में बढ़ रहे है और अच्छी गति से बढ़ रहे हैं।

टीसीआईएल जैसे बहुत से संगठन होंगे जो राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े नियमों को इसकी मूल भावना के साथ अपनाने का प्रयास कर रहे हैं, इसीलिए राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारियों से अनुरोध है कि कृपया ऐसे संगठनों का निरंतर निरीक्षण और मार्गदर्शन करते रहें, वे जहां सही हैं, उन्हें प्रोत्साहित करें और जहां गलत हैं, वहां उनका मार्गदर्शन करें। ऐसे बहुत से संगठन हैं जहां हिन्दी भाषा में बहुत काम हो रहा है पर फिर भी वे अपने प्रयासों के लिए पुरस्कृत नहीं हो पाते हैं। पुरस्कार न सही,किंतु हमें यह जानने का हक तो अवश्य है कि आखिर हमारे प्रयासों में कहां-कहां कमी है ताकि उसे दूर करते हुए हम हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले संगठनों की कतार में अपना स्थान बना सकें।

कपिल शर्मा

ई-मेल अपराध

ईमेल बॉम्बिंग

ईमेल बॉम्बिंग क्या है?

ईमेल बॉम्बिंग से तात्पर्य है- इंटरनेट उपयोग के दौरान किसी ऐसे पते पर बहुत अधिक मात्रा में ईमेल्स भेजा जाना जिसका उद्देश्य उस मेलबॉक्स को ओवरफ्लो करना हो या फिर सर्वर पर बहुत अधिक बोझ डालकर उसकी गति को बाधित करना है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000, यथासंशोधित 2008, में ईमेल बॉम्बिंग को एक अपराध की संज्ञा देते हुए इसका विवरण कुछ इस प्रकार किया गया है-यदि कोई व्यक्ति किसी कंप्यूटर, कंप्यूटर नेटवर्क की कंप्यूटर प्रणाली के स्वामी या प्रभारी की अनुमति के बिना उस कंप्यूटर, कंप्यूटर प्रणाली या नेटवर्क को बाधित करता है या ऐसे कारणों को उत्पन्न करता है तो वह इसी अपराध की श्रेणी में आएगा।

ईमेल बॉम्बिंग का विवरण

ईमेल बॉम्बिंग से तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति को भारी मात्रा में ईमेल भेजना जिसके चलते उस व्यक्ति का ईमेल खाता (किसी व्यक्तिगत मामले में) या मेल सर्वर (किसी कंपनी या ईमेल सेवा प्रदाता के मामले में) क्रैश हो जाता है।

ईमेल बॉम्बिंग में अपराधकर्ता किसी विशेष पते पर निरंतर ईमेल भेजता रहता है और ऐसे मेल्स की संख्या बहुत अधिक होती है। अधिकतर मामलों में ऐसी मेल्स में निरर्थक डेटा होता है जिसका उद्देश्य प्रणाली या नेटवर्क संसाधनों की खपत करना होता है। यह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे किसी युद्ध स्थल पर लगातार गोलाबारी करते हुए किसी चौकी या विशेष स्थान को नष्ट कर देना। ऐसी मेल्स किसी एक प्रेषक के नाम से

नहीं जाती बल्कि अलग-अलग प्रेषकों के नाम पर हज़ारों की संख्या में (उपयोगकर्ताओं की सूची भी बहुत बड़ी होती है) में भेजी जाती है। ईमेल स्पैमिंग की यह समस्या और भी विकट तब हो जाती है जब कोई प्राप्तिकर्ता ऐसी किसी मेल का जवाब दे देता है क्योंकि तब उसका यह प्रत्युत्तर बहुत सारे पतों पर पहुंच जाता है। एक प्रकार से किसी उपयोगकर्ताओं ने अनजाने में प्रत्युत्तर दे दिया लेकिन उसे यह नहीं पता होता है कि वह ऐसा करते हुए कई हज़ारों

दिनेश चावला

मेल्स अलग-अलग उपयोगकर्ताओं के लिए जेनेरेट कर रहा है। इसकी सबसे खराब बात यह है कि ऐसे ईमेल्स बिना किसी मतलब के होते है और यह नेटवर्क सर्वर डाउन होने के बाद भी लगातार आते रहते है। ईमेल बॉम्बिंग से सर्वर क्रैश हो सकता है और इंटरनेट कनेक्टिविटी बाधित हो सकती है। यदि आप इंटरनेट व्यवसायिक उद्देश्यों के लिए उपयोग कर सकते हैं तो ज़रा सोचिए कि कनेक्टिविटी बाधित होने से आपको कितना नुकसान होगा।

ईमेल धोखाधड़ी

ईमेल धोखाधड़ी क्या होती है?

ईमेल के माध्यम से वित्तीय, बैकिंग और सामाजिक रूप से की गई धोखधड़ी ईमेल धोखाधड़ी की श्रेणी में आती है। आज के समय में जहां धोखाधड़ी जैसे कुकृत्यों के लिए नित नई तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है वहां ईमेल ऐसे अपराधियों के लिए बहुत ही सस्ता साधन है। ऐसे

लोग ईमेल के माध्यम से लोगों को प्रलोभनों में फसांते हैं और ठगते हैं। अमेरिकी सीक्रेट सर्विस के अनुसार इस प्रकार की धोखाधड़ियों में प्रति वर्ष करोड़ों डॉलर्स का नुकसान हो रहा है और नुकसान की यह मात्रा निरंतर बढ़ रहीं है। इस प्रकार के कृत्यों में अपराधी अधिकतर ईमेल के माध्यम से लोगों का बैंक खाता नं. और पासवर्ड प्राप्त कर लेते हैं ऐसी किसी भी मेल का जवाब न दे जो आपको नकदी भेजने या अपनी निजी जानकारी भेजने के लिए कहे। ऐसी अधिकतर मेल्स में प्राप्तकर्ता को यह प्रलोभन दिया जाता है कि वह किसी आनॅलाइन प्रतियोगिता के माध्यम से एक बड़ी राशि का पुरस्कार जीत गए है और कृपया करके व अपना खाता नं. और पासवर्ड ईमेल से भेज दें ताकि उनके खाते में पैसों का अंतरण किया जा सके। कृपया इस प्रकार के मेल्स को स्पैम मेल्स ही मानें तथा ऐसी किसी भी मेल का जवाब न दें जो आपसे किसी भी प्रकार की निजी जानकारी मांगती हो।

ईमेल स्पूफिंग

ईमेल स्पूफिंग क्या है?

ईमेल स्पूफिंग एक प्रकार की ईमेल गतिविधि है जिसमें ईमेल प्रेषक का पता या ईमेल हैडर के अन्य भागों को बदल दिया जाता है जससे कि यह लगता है ऐसे ईमेल किसी और स्थान से आए हैं। सरल शब्दों में एक स्पूफ ईमेल्स का वास्तविक प्रेषक कोई और होता है पर पता किसी और का दिखाई देता है प्रेषक का अपनी पहचान छुपाने का उद्देश्य या तो गोपनीय जानकारी प्राप्त करना होता है या फिर किसी झुठे पते से अपने अनुचित कार्यो को करना होता है। ईमेल स्पूफिंग आज एक आम बात हो गई है और इसीलिए आपको जो भी मेल्स प्राप्त होती है,उसके प्रेषक को आपको एकदम से ही सही और वास्तविक नहीं मान लेना चाहिए। हैकर्स ईमेल स्पूफिंग के माध्यम से स्पैम संदेशों को भेजते हैं और इसके माध्यम से निजी व गोपनीय जानकारी तक प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। हैकर्स इस पद्धति का उपयोग करते हुए वेब पेज स्पूफिंग भी करते है ताकि उपयोगकर्ताओं की निजी और गोपनीय जानकारी प्राप्त हो सके।

ईमेल स्पूफिंग की व्याख्या

इसका अर्थ यह कदापि नहीं होता कि ईमेल स्पूफिंग के ज़रिए हैकर्स आपका ईमेल खाता हैक कर लेते हैं। ईमेल स्पूफिंग का मतलब यह है कि प्रेषक ने मेल क्लायंट को किसी और पते से मेल भेजते हुए उसे मूर्ख बनाया है। अब इसके कई कारण हो सकते हैं। प्रेषक इस प्रकार के मेलिंग से या तो निजी व गोपनीय जानकारी प्राप्त करना चाहता है या फिर ईमेल वायरस वितरित करना चाहता है। वास्तव में ईमेल स्पूफिंग को रोकने का कोई वास्तविक उपाय नहीं है। यदि आपको कोई ऐसा मेल मिलता है जिसमें संदिग्ध सामग्री हो, तो बेहतर यही होगा कि उस ईमेल को तुरंत डिलीट कर दें या फिर उसे खोलने से पहले किसी एंटी-वायरस प्रोग्राम का उपयोग कर उसे स्कैन कर लें।

क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी और ऑनलाइन बैंकिंग धोखाधड़ी

क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी क्या होता है?

कितनी विडंबना है कि हाल ही के कुछ वर्षो में जीवन को सुलभ करने के लिए नित कई तकनीकें चलन में आई जिनमें से एक क्रेडिट कार्ड सुविधा भी है साथ इन क्षेत्रों में धोखाधड़ी और घपलों के मामले भी सामने आए हैं जिसके चलते उपभोक्ताओं और बैंकिंग सेक्टर दोनो को ही एक बड़े स्तर नुकसान पहुंचता है। क्रेडिट कार्ड चोरी होने या ऑनलाइन डेटाबेस से क्रेडिट कार्ड चोरी होने पर प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए का नुकसान होता है। बुलेटिन बोर्ड्स और अन्य ऑनलाइन सेवाएं निरंतर हैकरों के निशाने पर रहती है क्योंकि यह प्राप्त करने के बाद वे एक बड़े स्तर पर रूपयों के लेनदेन का गबन कर सकते हैं।

क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी या ऑनलाइन बैंकिंग धोखाधड़ी से बचने के उपाय

- बैंक शाखा प्रबंधक के पास एक लिखित शिकायत दर्ज कराएं और

उसकी रसीद प्राप्त कर लें। यदि वह लेने से मना कर दे तो स्पीड पोस्ट के माध्यम से उसे भेज दें।

- अपने निकटतम पुलिस थाने/ साइबर पुलिसथाने/ साइबर सैल में पुलिस शिकायत दर्ज कराएं यदि पुलिस एफआईआर लिखने से मना कर दे तो एफआईआर को डाक से डीसीपी/एसीपी (क्षेत्र) को या डीसीपी(अपराध) या एसीपी (अपराध) को भेज दें और उसकी पावती प्रति अपने पास रख ले।

- यह जांच कर लें कि क्या अपने बैंक को आपके द्वारा केवाईसी फॉर्म के माध्यम से दी गई जानकारी के साथ कोई छेड़छाड़ तो नहीं की गई है। अपने मोबाइल ऑपरेटर से भी यह जांच कर लें कि क्या आपके नंबर का कोई डुप्लिकेट सिम तो जारी नहीं किया गया है। यदि ऐसा हो तो अपने मोबाइल ऑपरेटर के खिलाफ शिकायत दर्ज कराएं।

- बैंकिंग लोकपाल के पास ऑनलाइन शिकायत दर्ज करें। उल्लेखनीय है बैंकिंग लोकपाल भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा नियुक्त किया जाता है।

- सूचना प्रोद्योगिकी अधिनियम 2000 की धारा 46 के तहत राज्य में अधिनिर्णय अधिकारी के पास एक शिकायत दर्ज कराएं। उल्लेखनीय है कि यह अधिकारी तकनीक के माध्यम से पैसा चोरी होने के मामले को देखता है और उस पर उचित कार्रवाई करता है।

- अपने साथ हुई धोखाधड़ी के स्तर और परिस्थितियों के हिसाब से आप उपभोक्ता शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

- अपने ऑनलाइन खातों के सभी पासवर्ड/पिन/एमआईएन नबंर बदल दें। यदि आपके कंप्यूटर में स्पैम और जोखिम भरा डेटा एकत्रित हो गया है तो उसे तुरंत फॉर्मेट कर दें। नई हार्डडिस्क में केवल काम का डेटा ही रखें। आपॅरेटिंग सिस्टम और एंटीवायरस सॉफ्टवेयर का लाइसेंसी संस्करण ही स्थापित करें।

- विभिन्न मीडिया(प्रिंट और टीवी) संस्थानों को अपने मामले की सूचना दें।

- उपर्युक्त सभी प्राधिकारियों से निरंतर संपर्क में रहें और अपने मामले पर कार्रवाई की जानकारी लेते रहें।

- यदि आवश्यकता पड़े तो विधिक सहायता प्राप्त करें।

टीसीआईएल को हाल ही में मिलीं बड़ी परियोजनाएं

1. टीसीआईएल को मई 2015 में भारत संचार निगम लिमिट़ेड से भारतीय नौसेना के लिए टर्नकी आधार पर ऑप्टिकल फाइबर केबल, पीएलबी डक्ट, ऑप्टिकल इन्वेंटरी टूल फाइबर अनुवीक्षण प्रणाली, फाइबर इन्टर्शन प्रणाली के प्रापण, आपूर्ति, ट्रेंचिग, बिछाना, स्थापना, परीक्षण और रखरखाव का कार्य प्राप्त हुआ है। परियोजना की कुल लागत 666.00 करोड़ रु है।

2. टीसीआईएल को मार्च 2015 में सेक्टर 29, गुड़गांव में ग्रामीण विद्युतीकरण सहयोग के विश्व मुख्यालय भवन में निर्माण एवं विकास का कार्य प्रदान किया गया है। परियोजना की कुल लागत 354.67 करोड़ रु है।

परियोजना प्रबंधक और सार्वजनिक सेक्टर का महत्व (क्रमांक से आगे)

सफल व्यापार मूल्य की प्राप्ति व्यापक रणनीतिक योजना और प्रबंधन से आरंभ होती है। संगठनात्मक रणनीतिक संगठन के मिशन और दूरदृष्टि के जरिए बताई जा सकती है जिसमें बाजार, स्पर्धा और अन्य वातावरण कारकों के अभिमुखता का समावेश होता है। प्रभावी संगठनात्मक रणनीति विकास और तरक्की के लिए परिभाषित दिशानिर्देश प्रदान करती है और इसमें अतिरिक्त सफलता के लिए कार्यप्रदर्शन मानदंड प्रदान करती है। संगठनात्मक रणनीतिक और सफल व्यापार मूल्य की प्राप्ति के बीच के अंतर को कम करने के लिए पोर्टफोलियो प्रोग्राम और परियोजना प्रबंधन तकनीकियों का उपयोग अनिवार्य है।

पोर्टफोलियो, प्रबंधन घटकों (परियोजनाओं, प्रोग्रामों अथवा परिचालनों) को संगठनात्मक रणनीति के साथ समन्वयित करता है, पोर्टफोलियो, अथवा उप पोर्टफोलियो में संघटित करता है ताकि परियोजना अथवा प्रोग्राम उद्देश्यों, निर्भरताओं, लागत, समयबद्धता, लाभ, संसाधन और जोखिमों को अनुकूलतम किया जाए। यह संगठन के एक संपूर्ण अवलोकन की अनुमति प्रदान करता है कि किस प्रकार रणनीतिक लक्ष्य पोर्टफोलियो, संगठन के उपयुक्त अधिकार प्रबंधन को प्रदर्शित करता है और मानव, वित्तीय अथवा सामग्री संसाधन के आवंटन को अधिकृत करता है जो आपेक्षित कार्यप्रदर्शन और लाभ के आधार पर किया जाना चाहिए।

प्रोग्राम प्रबंधन का उपयोग करते हुए संगठनों के पास अनुकूलतम अथवा एकीकृत लागत, समय योजना, प्रयास और लाभ के लिए बहुपरियोजनाओं का समन्वयन करने की योग्यता होनी चाहिए। प्रोग्राम प्रबंधन का विशेष ध्यान परियोजना अंतरनिर्भरताओं पर होता है और वह इच्छित लाभों के प्रबंधन और प्राप्ति के लिए सर्वोत्कृष्ट पहल का निर्धारण करने में सहायता करता है।

प्रोग्राम प्रबंधन का उपयोग करते हुए संगठनों के पास ज्ञान, प्रक्रियाओं, कुशलताओं और उपकरण और तकनीकियों का प्रयोग करने की योग्यता होनी चाहिए जो बड़े स्तर पर परियोजनाओं की सफलता की संभावना में वृद्धि करते है। परियोजना प्रबंधन का विशेष ध्यान उत्पादों, सेवाओं अथवा परिणामों की सफल सुपुर्दगी पर होता है। प्रोग्रामों और पोर्टफोलियो के अंदर, परियोजनाएं संगठनात्मक रणनीति और उद्देश्यों को हासिल करने का माध्यम होती हैं।

इसके आगे संगठन इन पोर्टफोलियो, प्रोग्राम और परियोजना प्रबंधन गतिविधियों का समन्वयन संगठनात्मक सक्षमकर्ताओं को मजबूती प्रदान करते हैं जैसे संरचनात्मक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिकीय और मानव संसाधन कार्यव्यवहार। लगातार पोर्टफोलियों रणनीतिक समन्वयन और अनुकूलता को अपनाते हुए, व्यापार प्रभाव का विश्लेषण करते हुए और दृढ़ संगठनात्मक सक्षमताओं को विकसित करते हुए, संगठन सफल परिवर्तन को पोर्टफोलियों प्रोग्राम और परियोजनाओं के अधिकारक्षेत्र के अंदर हासिल कर सकता है और प्रभावी निवेश प्रबंधन और व्यापार मूल्य प्राप्ति को कायम रख सकता है।

1.7 परियोजना प्रबंधक की भूमिका

परियोजना प्रबंधक वह व्यक्ति होता है जो परियोजना उद्देश्यों को हासिल करने के लिए कार्यरत संगठन द्वारा दल का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त

किया जाता है। परियोजना प्रबंधक की भूमिका कार्य प्रबंधन और परिचालन प्रबंधक से भिन्न होती है। प्रतीकात्मक रूप से कार्य प्रबंधक का विशेष ध्यान क्रियाकलाप अथवा व्यापार इकाई के प्रबंधन निरीक्षण प्रदान करने पर होता है और परिचालन प्रबंधक यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होता है कि व्यापार का परिचालन कुशल है या नहीं।

यह संगठनात्मक संरचना पर निर्भर करता है कि एक परियोजना प्रबंधक, कार्य प्रबंधक को प्रतिवेदन कर सकता है। अन्य मामलों में एक परियोजना प्रबंधक कई परियोजना प्रबंधकों में से एक हो सकता है जो, एक प्रोग्राम पोर्टफोलियों प्रबंधन को प्रतिवेदन करता है जो कि, प्रतिष्ठान में बड़ी परियोजनाओं के लिए अंतिम रूप से उत्तरदायी होता है। इस प्रकार की संरचना में परियोजना प्रबंधक प्रोग्राम अथवा पोर्टफोलियों प्रबंधन के साथ बहुत करीबी स्तर पर परियोजना उद्देश्यों को हासिल करने के लिए कार्य करता है और अत्यंत महत्वपूर्ण प्रोग्राम योजना के साथ परियोजना प्रबंधन योजना के समन्वयन को सुनिश्चित करने के लिए कार्य करता है। परियोजना प्रबंधक अन्य भूमिकाओं में भी करीबी समन्वयन से कार्य करता है जैसे व्यापार, विश्लेषक, गुणवत्ता सुनिश्चितीकरण प्रबंधक और विषय विशेषज्ञ।

1.7.1 परियोजना प्रबंधक की जिम्मेदारियां और क्षमताएं

साधारणतया परियोजना प्रबंधक की जिम्मेदारी आवश्यकताओं की संतुष्टि करना है: कार्य की आवश्यकताएं दल की आवश्यकताएं और व्यक्तिगत आवश्यकताएं। चूंकि परियोजना प्रबंधन एक कठिन रणनीतिक माध्यम है इसलिए परियोजना प्रबंधक रणनीति और दल के बीच संपर्कसेतु बनता है। परियोजनाएं संगठनों की तरक्की और बने रहने के लिए आवश्यक होती हैं। परियोजनाएं मूल्यों की रचना उन्नत व्यापार प्रक्रियाओं के रूप में करती हैं और नए उत्पादों और सेवाओं के विकास में अत्यावश्यक होती हैं और कंपनियों के लिए इसे आसान बनाती है ताकि वातावरण,स्पर्धा और बाजार में परिवर्तन किया जा सके। परियोजना प्रबंधक की भूमिका इसलिए अधिक रणनीतिक हो जाती है। हालांकि ज्ञान, उपकरण और तकनीक को समझना और प्रयोग करना जो कि, अच्छे कार्यव्यवहार के रूप में मान्यताप्राप्त है वह प्रभावी परियोजना प्रबंधन के लिए पर्याप्त नहीं है। परियोजना के लिए किसी आवश्यक क्षेत्र में विशिष्ट कौशल और सामान्य प्रबंधन प्रवीणता के अतिरिक्त प्रभावी परियोजना प्रबंधन आवश्यक है। परियोजना प्रबंधक में अधोलिखित विशेषताएं हों।

ज्ञान– इसका तात्पर्य यह है कि परियोजना प्रबंधक परियोजना प्रबंधन के बारे में क्या जानता है।

कार्यप्रदर्शन– इसका तात्पर्य यह है कि परियोजना प्रबंधक अपने परियोजना प्रबंधन ज्ञान को प्रयोग करने के समय क्या करने अथवा क्या संपादित करने में सक्षम है।

व्यक्तित्व– इसका तात्पर्य यह है कि परियोजना अथवा संबधित गतिविधि सम्पादित करते समय परियोजना प्रबंधक का बर्ताव कैसा है। व्यक्तित्व प्रभावशीलता में रवैया, मुख्य व्यक्तित्व विशेषताएं और नेतृत्व शामिल होते हैं जो परियोजना उद्देश्यों को हासिल करते समय और परियोजना दल का मार्गदर्शन और परियोजना अवरोधों को संतुलित करने की योग्यता प्रदान करती है।

1.7.2 परियोजना प्रबंधक का लोक-व्यवहार कौशल

परियोजना प्रबंधक परियोजना दल और अन्य अंशधारकों के माध्यम से कार्य को पूरा करते हैं। प्रभावी परियोजना प्रबंधकों को नैतिक लोक व्यवहार, और वैचारिक कौशल के संतुलन की आवश्यकता होती है जो कि उनको स्थितियों का विश्लेषण करने और उपयुक्त रूप से संवाद करने में सहायता करता है। लोक-व्यवहार कौशल पर परिशिष्ट महत्वपूर्ण

लोक-व्यवहार कौशल का वर्णन करता है, जैसे:

- **नेतृत्व,**
- **दल निर्माण करना,**
- **प्रेरणा,**
- **संचार,**
- **प्रभावित करना,**
- **निर्णय लेना,**
- **राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरूकता,**
- **समझौता वार्ता(मोल-भाव),**
- **विश्वास निर्माण करना,**
- **मतभेद प्रबंधन और**
- **प्रशिक्षण देना।**

1.8 प्रोजेक्ट मैनेजमेंट बॉडी ऑफ नॉलेज

नॉलेज गाइड कई प्रकार के उद्योगों में अधिकतर परियोजनाओं के प्रबंधन में समय मानक होता है। परिशिष्ट ।1 में समाविष्ट यह मानक एक सफल परिणाम की ओर एक परियोजना को प्रबंधित करने के लिए उपयोग हुई परियोजना प्रबंधन प्रक्रियाओं, उपकरणों और तकनीकों का वर्णन करता है।

यह मानक, परियोजना प्रबंधन क्षेत्र के लिए एकरूप होता है और प्रोग्राम प्रबंधन और पोर्टफोलियों प्रबंधन जैसी अन्य परियोजना प्रबंधन व्यवस्था से परस्पर संबंध रखता है।

परियोजना प्रबंधन मानक प्रत्येक प्रकरण के सभी विवरणों को नहीं बताते। यह मानक अकेली परियोजनाओं और परियोजना प्रबंधन प्रतिक्रियाओं तक सीमित होते है जो सामाान्यतया अच्छे कार्यव्यवहार के रूप में मान्यताप्राप्त हैं। अन्य मानकों से वृहद् संदर्भ में अतिरिक्त सूचना के लिए परामर्श लिया जाता है जिसमें परियोजनाएं संपादित होती हैं, जैसे:

▸ द स्टैंडर्ड फॉर प्रोग्राम मैनेजमेंट [3] में प्रोग्रामों के प्रबंधन के बारे में बताया गया है।

▸ द स्टैंडर्ड फॉर पोर्टफोलियों मैनेजमेंट [4] में पोर्टफोलियों के प्रबंधन के बारे में बताया गया है।

▸ ऑर्गेनाइजेशनल प्रोजेक्ट मैनेजमेंट मैच्युरिटी मॉडल (OPM3) [5] में एक प्रतिष्ठान की परियोजना प्रबंधन प्रक्रिया क्षमता के परीक्षण के बारे में बताया गया है।

यह जिंदगी

हर इक मोड़ पे नई है ये ज़िन्दगी
कैसी मिली मुझे यह ज़िन्दगी

आंसुओ का इक सैलाब है यह ज़िन्दगी
चन्द मुरझाए हुए फूलों का चमन है ज़िन्दगी

हर इक मोड़ पे ठोकर है ये ज़िन्दगी
खुशियों का डेरा न हसरतों का सवेरा

हसरतों का बसना, मिटना और टूट कर
बिखर जाना है ये ज़िन्दगी,
न डाली है न कोई आशियाना है, सिर्फ
अन्धेरों का काला चमन है यह ज़िन्दगी
खुद रोना और सबको हंसाना है यह ज़िन्दगी

हर इक मोड़ पे नई है ये ज़िन्दगी
कैसी मिली मुझे ये ज़िन्दगी

-संगीता कोहली गोगना

संगठनात्मक प्रभाव और परियोजना जीवन चक्र

परियोजनाएं और परियोजना प्रबंधन ऐसे वातावरण में किया जाता है, जो स्वयं परियोजना के मुकाबले वृहद् होते हैं। इस वृहद् संदर्भ की समझ यह सुनिश्चित करती है कि यह कार्य संगठन के लक्ष्यों को पूर्ण करने की दिशा में किया गया है और वह संगठन की स्थापित कार्यपद्धतियों के अनुसार प्रबंधित है। यह अनुभाग का वर्णन करता है कि किस प्रकार संगठनात्मक प्रभाव कर्मचारियों की नियुक्ति, प्रबंधन, और परियोजना के निष्पादन करने के तरीकों को प्रभावित करता है यह अनुभाग परियोजना के शासनप्रणाली, परियोजना दल की सरंचना एंव सदस्यता, परियोजना को चरणबद्ध करने से सबंधित विभिन्न तरीकों एंव परियोजना के जीवन चक्र में निहित गतिविधियों के संबंधों अंशधारकों के प्रभाव की चर्चा करता है निम्नलिखित प्रमुख अनुभागों पर चर्चा की गई है:

2.1 परियोजना प्रबंधन पर संगठनात्मक प्रभाव

2.2 परियोजना अंशधारक और शासनप्रणाली

2.3 परियोजना दल

2.4 परियोजना जीवन चक्र

2.1 परियोजना प्रबंधन पर संगठनात्मक प्रभाव

किसी संगठन की संस्कृति, शैली एंव संरचना उसकी परियोजनाओं के कार्यप्रदर्शन पर प्रभाव डालते हैं। किसी संगठन की परियोजना प्रबंधन परिपक्वता की कोटि एवं उसकी परियोजना प्रबंधन प्रणाली भी परियोजना पर प्रभाव डाल सकती है। जब परियोजना में संयुक्त उपक्रम या भागीदारी अनुबंध के हिस्से के रूप में बाहरी संस्थाओं का समावेश होता है, तब परियोजना एक से अधिक प्रतिष्ठानों द्वारा प्रभावित होगी। निम्नलिखित अनुभाग संगठनात्मक लक्षणों, कारकों एंव प्रतिष्ठान के अंदर कर परिसम्पत्तियों का वर्णन करते हैं, जिसके परियोजना पर प्रभाव डालने की संभावना होती है।

2.1.1 संगठनात्मक संस्कृति, एंव शैली

संगठन संस्थाओं (व्यक्तियों और/ अथवा विभागों) की सुनियोजित व्यवस्था होती है जिसका ध्येय एक प्रयोजन को पूर्ण करना है जिसमें परियोजनाओं को आरंभ करने का समावेश भी होता है। किसी संगठन की संस्कृति एंव शैली का उसके द्वारा की जाने वाली परियोजना के आयोजन पर प्रभाव होता है। संस्कृति और शैली सांस्कृतिक नियमों के रूप में माने जाने वाले सामूहिक घटनाक्रम होते है जो समय के साथ विकसित होते हैं। इन नियमों में परियोजनाओं को आरंभ करने और नियोजित करने के तरीकों, कार्य को सपंन्न करना, स्वीकृति तरीकों तथा निर्णय करने वाले और निर्णय को प्रभावित करने वाले अधिकारियों का समावेश होता है।

संगठनात्मक संस्कृति की रचना संगठन के सदस्यों के सामान्य अनुभवों से होती है और अधिकतर संस्थानों ने समय के साथ कार्यव्यवहारों और सामान्य उपयोग द्वारा विशिष्ट संस्कृतियां विकसित की

हैं। सामान्य अनुभव निम्नलिखित का समावेश है, परंतु इन्हीं तक सीमित नहीं है:

- साझा दृष्टिकोण, मिशन, मूल्य, धारणाएं एवं अपेक्षाएं,
- नियमन, नीतियां, पद्धतियां, एवं कार्यविधियां,
- प्रोत्साहन और पुरस्कार प्रणालियां
- जोखिम सहनक्षमता
- नेतृत्व के दृष्टिकोण, पदानुक्रम और प्राधिकार संबंध

- आचार संहिता, कार्य नीतिशास्त्र एंव कार्य समय

- परिचालन वातावरण

संगठनात्मक संस्कृति एक प्रतिष्ठान वातावरण कारक होता है जैसा कि आकृति 2.1.5 में वर्णित है। संस्कृति और शैली सीखी जाती है और साझा की जाती है एवं इनका परियोजना की लक्ष्य प्राप्त करने की क्षमताओं पर गहरा प्रभाव हो सकता है। एक परियोजना प्रबंधक को उन विभिन्न संगठनात्मक शैलियों और संस्कृतियों को समझना चाहिए जो किसी परियोजना को प्रभावित कर सकती है परियोजना प्रबंधक को यह ज्ञात होना आवश्यक है कि संगठन में कौन से व्यक्ति निर्णयकर्ता हैं और उसे परियोजना को सफल बनाने के लिए उनके साथ कार्य करना चाहिए।

वैश्विकरण के युग में उन परियोजनाओं में संस्कृतिक प्रभावों के परिणाम को समझना जिनमें तरह-तरह के संगठनों की भागीदारी होती है और जो विश्व भर में अलग-अलग स्थानों पर संपन्न होती है। संस्कृति परियोजना की सफलता को निर्धारित करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक बन जाती है और बहु-संस्कृति सामर्थ्य परियोजना प्रबंधक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण बन जाता है।

2.1.2 संगठनात्मक संचार

परियोजना प्रबंधक की सफलता किसी संगठन में प्रभावी संगठनात्मक संचार की शैली पर बहुत सीमा तक निर्भर होती है, विशेष तौर पर परियोजना प्रबंधक व्यवसाय के वैश्विकरण के दौर में। संगठनों की संचार क्षमता का परियोजनाओं की शासनप्रणाली पर गहरा प्रभाव होता है। इसके परिणाम स्वरूप दूरदस्थ स्थानों पर मौजूद परियोजना प्रबंधक अधिक प्रभावी रूप से संगठन के आंतरिक अंशधारकों से संर्पक साध सकते हैं और निर्णय करने की सुविधा दे सकते है। अंशधारक और परियोजना दल सदस्य इलेक्ट्रॉनिक संचार जैसे ई-मेल, टेक्सटिंग, इंस्टंट मेसेजिंग, सोशल मीडिया, वीडियो और वेब कॉनफ्रैंसिंग तथा अन्य प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों इत्यादि का उपयोग परियोजना प्रबंधक से संपर्क साधने के लिए औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से कर सकते हैं।

2.1.3 संगठनात्मक संरचना

संगठनात्मक संरचना एक प्रतिष्ठान वातावरण कारक है जो संसाधनों की उपलब्धता को प्रभावित कर सकते हैं और परियोजना कैसे संचालित की जाए इसे भी प्रभावित कर सकते हैं (अनुभाग 2.1.5 देखे) संगठनात्मक संरचना विभागीय से परियोजनात्मक के बीच होती है और उनके मध्य कई तरह की तालिका संरचनाएं हो सकती है। सारणी 2-1 बड़ी संगठनात्मक संरचनाओं के मुख्य परियोजना-सबंधी लक्षणों को दर्शाती है।

सारणी 2 व 1-परियोजनाओं पर संगठनात्मक संरचनाओं का प्रभाव

संस्थान संरचना / परियोजना लक्षण	विभागीय	तालिका			परियोजनात्मक
		कमजोर तालिका	संतुलित तालिका	मजबूत तालिका	
परियोजना प्रबंधक के अधिकार	अल्प अथवा कुछ नहीं	निम्न	निम्न से माध्यम तक	माध्यम से उच्च तक	उच्च से लगभग सम्पूर्ण
संसाधन उपलब्धता	अल्प अथवा कुछ नहीं	निम्न	निम्न से माध्यम तक	माध्यम से उच्च तक	उच्च से लगभग सम्पूर्ण
परियोजना बजट को कौन नियंत्रित करता है	विभागीय प्रबंधक	विभागीय प्रबंधक	मिश्रित	परियोजना प्रबंधक	परियोजना प्रबंधक
परियोजना प्रबंधक की भूमिका	अंश-कालिक	अंश-कालिक	पूर्ण-कालिक	पूर्ण-कालिक	पूर्ण-कालिक
परियोजना प्रबंधक प्रशासकीय कर्मचारी	अंश-कालिक	अंश-कालिक	अंश-कालिक	पूर्ण-कालिक	पूर्ण-कालिक

पारंपरिक विभागीय संगठन जो आकृति 2-1 में दर्शाया गया है वह एक वर्गीकरण है जहां प्रत्येक कर्मचारी का एक स्पष्ट उच्चधिकारी होता है। कर्मचारियों को शीर्ष स्तर पर उनकी विशेषज्ञताओं जैसे उत्पादन, विपणन, आभियांत्रिकी और लेखा के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। विशेषताओं को आगे केंद्रित विभागीय इकाइयों में उपविभाजित किया जा सकता है जैसे यांत्रिकी और विधुत आभियांत्रिकी। किसी विभागीय संगठन में प्रत्येक विभाग अपना परियोजना कार्य अन्य विभागों पर निर्भर हुए बगैर स्वतंत्र रूप से करते हैं।

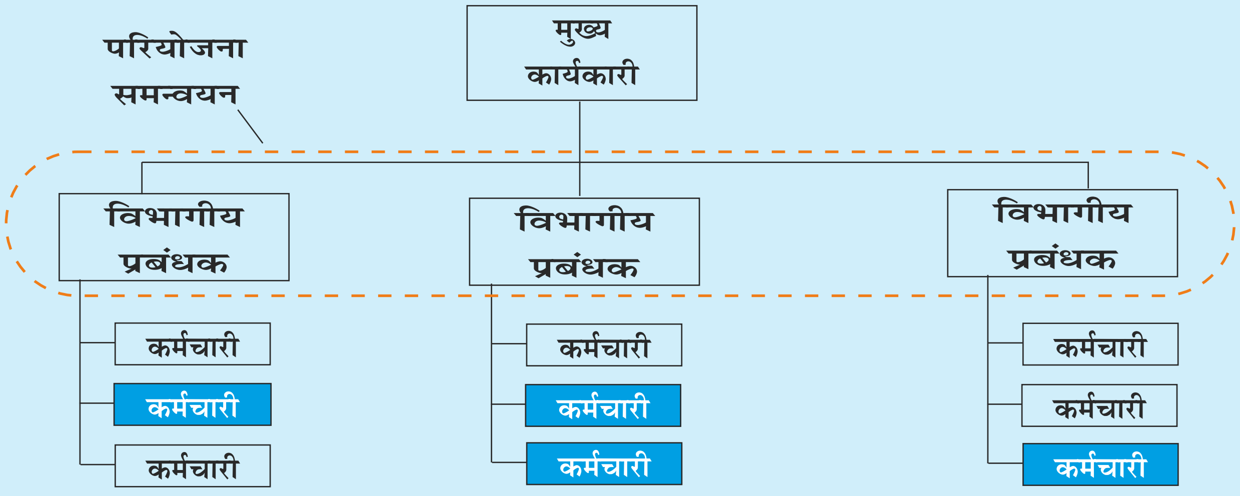

(स्लेटी रंग के चौखाने परियोजना गतिविधियों में लिप्त कर्मचारी को दर्शाते हैं।)

आकृति 2 &1 विभागीय संगठन

आकृति 2-2 से 2-4 तक दर्शायी गई तालिका संगठन एक विभागीय और परियोजनात्मक लक्षणों का मिश्रण है। तालिका संगठनों को कमजोर,संतुलित और मजबूत के रूप वर्गीकृत किया जा सकता है। जो विभागीय और परियोजना प्रबंधक के बीच शक्ति और प्रभाव के संबधित स्तर पर निर्भर करता है। कमजोर तालिका एक विभागीय संगठन की कई विशेषताओं को बनाए रखता है और परियोजना प्रबंधक की भूमिका एक असली परियोजना प्रबंधक की तुलना में केवल एक संयोजक अथवा आपूर्ति व्यवस्थापक की होती है। एक परियोजना आपूर्ति व्यवस्थापक कर्मचारी सहायक और संचार संयोजक के रूप में कार्य करता है। आपूर्ति व्यवस्थापक न तो व्यक्तिगत रूप से निर्णय ले सकता है अथवा न ही उसे थोप सकता है परियोजना संयोजक के पास कुछ निर्णय लेने की शक्ति एंव कुछ अधिकार होते हैं और वह उच्चतर प्रबंधक के अंतर्गत कार्य करता है। मजबूत तालिकाओं में परियोजनात्मक संगठन के अनेक लक्षण होते हैं और उनके पास यथोचित अधिकार वाले पूर्ण-कालिक परियोजना प्रबंधक होते हैं और पूर्ण-कालिक परियोजना प्रशासकीय कर्मचारी होते है। संतुलित तालिका संगठन एक परियोजना प्रंबधक की आवश्यकता को मान्यता देते हैं, परंतु यह परियोजना प्रबंधक को परियोजना और परियोजना निधि के लिए सम्पूर्ण अधिकार प्रदान नहीं करते हैं। सारणी 2-1 विभिन्न तालिका संगठन संरचनाओं का अतिरिक्त विवरण प्रदान करती है।

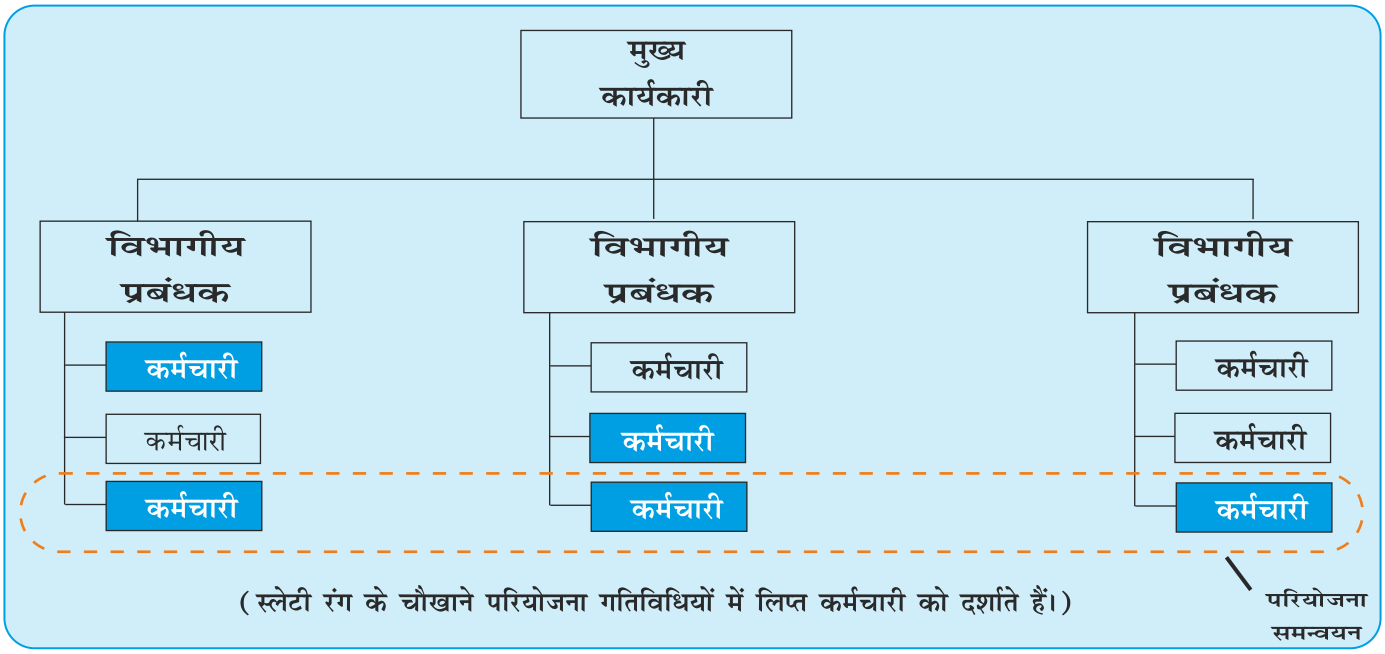

आकृति 2 - 2 कमजोर तालिका संगठन

साभार- यह लेख प्रोजेक्ट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''प्रोजेक्ट मैनेजमेंट बॉडी ऑफ नॉलेज'' का अंश है।

टीसीआईएल में अंतरराष्ट्रीय महिला सप्ताह का आयोजन

भाषा का निरीक्षण

कपिल शर्मा

एक महीने की जबरदस्त तैयारियों के बाद आखिर वो दिन आ ही गया जिसके लिए यह सब हो रहा था। हमारा नबंर आया, जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। पर इस निरीक्षण के बाद बहुत कुछ ऐसा है जो मन में था, पर जुबान पर नहीं आया। उससे एक दिन पहले ही मैने 'पीके' फिल्म देखी थी। सोचता हूं कि शायद हमारे साथ 'पीके' जैसा कोई प्राणी होता तो वो बड़ी ही मासूमियत से वो प्रश्न पूछ लेता जिसे पूछने की हम सभी हिम्मत नहीं कर पाते हैं। मैं सोच रहा हूं कि हमारे साथ 'पीके' बैठा होता तो वो क्या कहता, शायद यही कुछ कहता जो मैं नीचे लिखने जा रहा हूं।

'पीके'- समिति से हमरा एकठो सवाल है। आप हमें बहुत देर से डांट पिला रहे हैं कि ई सही नहीं है,उ बहुत कम है, पर हमरी एक गलती पर आपका ध्यान नहीं जा रहा है। आपने हम लोगन को जो लैटर भैजा, उ मा लिखे गए हर निर्देश को हमने माना पर एक निर्देशवा कि कीमती उपहार जैसे खर्चों से बचा जाए, उ हमने नहीं माना। तो इसके लिए हमें डांट काहे नहीं लगाई।

समिति- यह क्या बकवास है? हमने तो आपको नहीं बोला कि ये उपहार हमें दो।

'पीके'- पर आपने मना भी तो नहीं किया इ सब काहे लाए। अब ले ही आए हो तो भापिस ले जाइए। या हमरी बजाए उन लोगन को दे दीजिए जौन लोगन को इ का ज़रूरत है। आपका इ स्टाफ तो गिफ्ट को लेकर हमें उ तेवर दिखा रहा है जैसन लड़के वाले दहेज को लेकर लड़की वालों को दिखाते हैं। तनिक पूछिए इनसे?

समिति- देखिए, उपहार देना न देना आप लोगों की मर्जी होता है। हमें कोई फर्क नहीं पड़ता है। हम यहां जिस चीज़ पर बात करने आए हैं, उससे हमारा ध्यान मत भटकाइए। हम यहां भाषा का निरीक्षण कर रहें हैं, जिसका सम्मान आप लोगों को भी करना चाहिए। जोकि हो नहीं रहा है। और ये सब फालतू बातें कर हमारा बहुमूल्य समय नष्ट किया जा रहा है।

'पीके'- सफेद कपड़े पहन कर झूठ काहे बोल रहे हैं। जब हम आप लोगन का स्वागत कर रहे थे। तब आप लोगन का हाथ पकड़ कर आप लोगन के मन में जो चल रहा था, उ सब का टिरांसफर हम मार लिए। आप लोगन के मन में चल रहा था-'अरे यार, 5 बजे तक कौन बैठेगा, लंच से पहले ही सबको निपटा देते हैं। अरे यार, इतना भीड़-भड़क्का है, कहीं गिफ्ट इधर-उधर न हो जाएं। यार, मुझे इस कमेटी में क्यों डाला? सबसे बकवास कमेटी है। अरे यार, इससे अच्छा अशोका जैसे किसी होटल में रख लेते।

समिति-यह क्या बद्तमीजी हो रही है यहां। यह सब झूठ है?

'पीके'- सर, झूठ इ गोले पर बोला जाता है, हमरे गोले पर नहीं। बैइसे, आप गुस्सा काहे रहे हैं? इ मा आपका कसूर नहीं है। आप तो वही सब कुछ कर रहे हैं जो बरसों से हो रहा है। बरसों से किसी ने आपके दिमाग मा इ रॉन्ग नबंर फिट कर दिया है कि इस कमेटी को ऐइसे ही निरीक्सन करना चाही। आपको किसी ने बताया ही नहीं कि निरीक्सन करना है तो सबके ऑफिस में जा-जा के निरीक्सन करो। देइखो कि उन्हें इस भासा में काम करने में कौन परेसानियां आती है। अचानक धावा बोल दो ताकि इ पता चले कि जो जनकारी उन्होने प्रश्नावली में भर के दी थी, उ सही है या नही। गिफट लेने की बजाए इ गिफट उन लोगों को दो जो इ भासा जानत नाहीं पर फिर भी खुसी-खुसी इ भासा में काम कर रहे हैं। माफ करना सर, मगर निरीक्सन करहे का आपका यह सिस्टम अब लुल हो चुका है। इ

का तुरंत बदल दीजिए।

समिति– तो महाशय, आपको लगता है कि हम अपनी जिम्मेदारी सही तरीके से नहीं निभा रहे हैं। ये हमारी डांट का ही असर है कि कार्यालयों में अपनी भाषा में काम पहले से बहुत बढ़ा है। जरा सबके आंकड़े उठा कर देखो, पता चल जाएगा। अगर हम लोग ये सब कुछ न करे तो हमारी भाषा अपने देश में ही पराई हो जाएगी। इस भाषा को देश–विदेश में आज जो सम्मान मिल रहा है, वो हमारी वजह से ही मिल रहा है।

'पीके'– आपको गलतफहमी है। ऑफिसों में इ भासा में काम नहीं हो रहा है सिरफ डांट का टिरांसफर हो रहा है। आपने इनको डांटा,इ लोग आगे अपने जूनियर को डांटेगे जहां इ भासा में काम हो रहा है, उहां डर के मारे हो रहा है कि इ भासा का तिरस्कार किया तो हमरी नौकरी पर बन आए। सच तो इ है कि हर कोइ ओ ही भासा में करना चाहता है जौन उन लोगों को आसान लगती है, जौन उनने बचपन से सीखी है। अब आपके गोले में इत्ती सारी भासाएं है, इ का लिए लोग जिम्मेदार थोड़े ही है। भासा प्रेम से सीखी जाती है, मगर थोपने की कोसिस करी, तो लोग गुस्सा जाते हैं। अगल हल करना है तो इ परेसानियों को हल करा जाए। सब लोग मिलकर इ परेसानियों का हल काहे नहीं निकालते?

समिति– बेटे, तुम्हें कुछ नहीं पता। अनर्गल बातें मत करो। अपनी भाषा के प्रति लोगों का प्रेम पहले से बढ़ा है।

'पीके'– आपको कइसे मालूम।

समिति– ये आंकड़े..........

'पीके'– आंकड़े झूठ भी तो हो सकते है

समिति–बच्चे, किसी में इतनी हिम्मत नहीं है कि हमारे समक्ष झूठ बोल सके। अगर किसी ने बोल दिया तो वो बचेगा नहीं।

'पीके'– अरे, सर क्या आपको मालूम नहीं चला है अभी तक कि सब लोग आपसे झूठ ही बोल रहे हैं। और अब आप एक औउर झूठ नहीं बोलना कि आपको इ सब पता नहीं है।

समिति– बकवास बंद करो। हमारे देश में आजकल लोगों को लगता है कि वो बहुत स्मार्ट हो गए है, किसी को कुछ भी बोल सकते हैं। और हमारी समिति को तो आज कल हर कोई हल्के में लेने लगा है। चलिए, अभी बताते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। आप एक काम कीजिए। हम तीन महीने बाद अब आपका दुबारा निरीक्षण करेंगे। आपके ऑफिस में ही करेंगे । कर लौ तैयारी।

'पीके'– हमरा एकठो और सवाल है। हम किस चीज़ कि तैयारी पर फोकस करें। भासा में काम बढ़ाने पर या आपकी खातिरदारी को और बेहतर करने पर?

इसके बाद जाहिर सी बात है कि समिति के लोग पैर पटक कर वहां से चलें जाएंगे, पीके की बहुत धुलाई होगी। उसे पागल,टल्ली, मूर्ख जैसे कई खिताब मिलेंगे। मिलने भी चाहिए। कोई बेवकूफ आदमी ही सिस्टम चैलेंज करने की हिम्मत कर सकता है। सभी लोग बार–बार उसे यह कहकर कोसेंगे कि तुझे यह सब बकवास करने की ज़रूरत क्या थी, जब सब कुछ सहीं चल रहा था। हां, सही बात है। सब कुछ सही हीं तो चल रहा है। आखिर नींद तो हम सभी को प्यारी लगती है। और जो हमें जगाने की कोशिश करता है, सबसे ज्यादा गुस्सा उसी पर तो आता है। सोए हुए हैं हम, सोए ही रहते है न।

एकलव्य (कहानी)

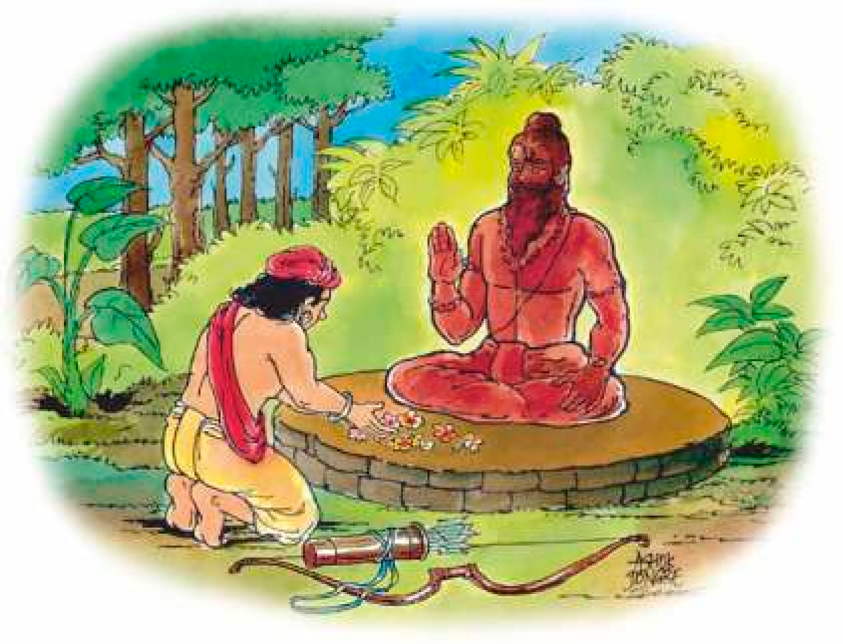

द्रोणाचार्य ने अपने जीवन की अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जी-तोड़ मेहनत कर अपने ज़माने में पूरे भारत में आई.ए.एस. परीक्षा में टॉप किया था। टॉपर होने के बाद उन्हें कई अच्छे प्रस्ताव मिले पर उन्होंने इसकी बजाए शहर के सबसे बड़े उद्योगपति आर्यस एंड संस के कोचिंग सेंटर के प्रधान कोच का पद स्वीकार कर लिया। उल्लेखनीय है कि आर्यस भारत का सबसे बड़ा उद्योग समूह था और वर्षो से इस परिवार ने पूरे भारत के कॉरपोरेट जगत में अपना सिक्का जमाए रखा था। पीढ़ी दर पीढ़ी इस परिवार में एक से बढ़कर एक उद्योगपति ने व्यापार जगत में अपनी धाक जमाई। वैसे द्रोण चाहते तो अपनी तरह के कई टॉपर भारत के लिए बना सकते थे पर ज़ाहिर सी बात थी, उन्हें इससे बड़ा प्रस्ताव और कोई नहीं मिल सकता था तो उन्होंने कहीं नौकरी करने की बजाए इस उद्योगपति समूह में ही कोचिंग करने का प्रस्ताव चुना। इस सेंटर का नाम इस परिवार ने अपने सबसे होनहार बालक अर्जुन के नाम रखा था, अर्जुन कोचिंग सेंटर। आई.ए.एस. ,आई.आई.एम सभी के लिए यहां तैयारी कराई जाती थी। यह साल तो बहुत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इस साल वह छात्र परीक्षा देने जा रहा था, जिसके नाम पर इस सेंटर का नाम पड़ा 'अर्जुन'। चुंकि इस सेंटर की फीस बहुत अधिक थी, अतः इस कॉरपोरेट परिवार या अन्य बहुत अमीर बच्चों के अलावा किसी और को एडमिशन मिलना बहुत मुश्किल था। मामूली लोगों के लिए तो इस सेंटर में एडमिशन लेना एक सपने की तरह था।

इस शहर से थोड़ा दूर एक गांव मे एक गरीब किंतु होनहार छात्र रहता था, एकलव्य। वह बचपन से ही हर कक्षा में प्रथम आता था और पूरे देश मे टॉपर आने का सपना था। उसका। इसके लिए अर्जुन कोचिंग सेंटर से कोचिंग लेना चाहता था। पर जब उसे पता चला कि इस कोचिंग सेंटर की फीस बहुत ज्यादा है और यहां पर बाहरी छात्रों का प्रवेश लगभग असंभव है, उसका दिल टूट गया। पर उसने हार नहीं मानी। उसने अपने डेस्कटॉप पर गुरू द्रोण की तस्वीर डाउनलोड करके लगाई। अपने गुरू के बारे मे जितनी जानकारी ईटरनेट पर उपलब्ध थी, उसने वो सब एकत्रित की। अपने गुरू के बारे में शोध किया, पता लगाया कि उन्होने अपने समय में किस प्रकार तैयारी की थी। साथ ही उसने इस कोचिंग सेंटर से पढ़कर निकले पुराने छात्रों के नोट्स एकत्रित किए और तैयारी करने मे दिन रात-एक कर दिया।

परीक्षा का दिन आया। गुरू द्रोण ने अर्जुन को टॉपर बनाने मे अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। उन्हे अपने प्रिय शिष्य के टॉपर बनने पर पूरा भरोसा था। दूसरी तरफ एकलव्य भी अपने गुरू की तस्वीर को नमन कर परीक्षा देने निकल पड़ा। परीक्षा संपन्न हुई। कुछ दिनों बाद परीक्षा परिणाम

घोषित किया गया। अर्जुन कोचिंग सेंटर के सभी छात्रों को भरोसा था कि इस बार अर्जुन ही टॉप करेगा। पर परिणाम कुछ और ही निकला। एकलव्य ने टॉप किया। पूरे देश के लोग हैरान रह गए कि इस बार का टॉपर अर्जुन कोचिंग सेंटर का छात्र अर्जुन नहीं बल्कि एक मामूली सा छात्र एकलव्य है। गुरू द्रोण के पैरों तले जमीन खिसक गई। यह तो उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था। वे यह सोच-सोच कर परेशान होने लगे कि अब उनकी और उनके कोचिंग सेंटर की क्या इज्जत रह जाएगी? लोग यही सोचेंगे कि इतनी भारी-भरकम फीस लेने वाले सस्थान से भी टॉपर नही निकलते तो इतनी फीस देने का क्या फायदा? इससे पहले कि एकलव्य पूरे मीडिया और अखबार की सुर्खियों का केंद्र बनते हुए टी.वी पर आए, गुरू द्रोण चुपके से एकलव्य से मिलने निकल पड़े। वहां पहुंच कर उन्होनें एकलव्य से पूछा, बेटा, तुम कौन से कोचिंग सेंटर से पढ़े हो?

एकलव्य ने जवाब दिया, गुरूजी, मैने अपनी सारी तैयारी स्वंय की है। पर मेरी प्रेरणा के स्त्रोत केवल आप ही हो। गरीब होने के कारण मै आपके कोचिंग सेंटर मे एडमिशन नहीं ले पाया, सो आपकी फोटो को सामने रख स्वंय ही तैयारी करता रहा। गुरू द्रोण यह सुनकर स्तब्ध रह गए। जिन छात्रों को उन्होने स्वंय पढ़ाया, वे टॉप नहीं कर पाए और इस छात्र ने केवल उनकी तस्वीर से प्रेरणा लेते हुए ही टॉप कर लिया। वे बोले, 'एकलव्य तुमने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। पर यदि दुनिया को पता लगा तो मेरी नौकरी, मेरी प्रतिष्ठा पर धब्बा लग जाएगा। अगर तुम मुझे गुरू मानते हो तो मुझे गुरू दक्षिणा मांगने का पूरा हक है। बोलिए, गुरूजी, क्या चाहिए? मै तैयार हूं, एकलव्य ने कहा। कुछ देर रुक कर गुरू द्रोण बोले, तुम्हे मीडिया के सामने यह कहना होगा कि मैने अर्जुन कोचिंग सेंटर से कोचिंग ली है। "रेगुलर" करने की हैसियत नहीं थी तो कॉरसपोंडेस पढ़ाई की पर कोचिंग मैने गुरू द्रोण और उनके कोचिंग सेंटर से ही ली है। यही नहीं तुम्हे अपने इस अगूंठे से मेरा फेसबुक और ट्वीटर पेज 'लाइक' करना होगा और सोशल मीडिया में यह ऐलान करना होगा कि टॉपर बनना है तो गुरू द्रोण से ट्रेनिंग लें।

एकलव्य ने वचन निभाया और ऐसा ही किया। तो इस प्रकार गुरू द्रोण की प्रतिष्ठा बची रही। अर्जुन टॉप तो नहीं कर पाया पर उसे वैसे भी कौन सी नौकरी करनी थी? वह तो केवल शोहरत के लिए यह परीक्षा दे रहा था। वह अपनी परिवार की प्रतिष्ठा के कारण उद्योग जगत पर छाया रहा। यह बात और है कि उसके अपने परिवार में ही फूट थी और जमीन-जायदाद को लेकर भाई-भाई लड़ते रहे और सुप्रीम कोर्ट में इतने मामले पेंडिंग चल रहे है कि ऐसा लगता है कि सुप्रीम कोर्ट इन भाइयों की 'महाभारत' को सुलझाने वाली पंचायत बनकर रह गई है।

गुरू द्रोण का कोचिंग सेंटर अब पहले से अधिक अच्छा चल रहा है। फीस अब पहले से भी अधिक हो गई है। साथ ही उन्होंने गरीब बच्चों के लिए एक कॉरसपोंडेस कोर्स की व्यवस्था की है। हालांकि फीस यहां भी लगती है और एडमिशन मिलना वहां भी मुश्किल है पर इससे उनकी प्रतिष्ठा में और वृद्धि हो गई है। द्रोण ने बचपन भले ही गरीबी मे काटा हो पर अब उनके पास सभी सुख-सुविधाएं मौजूद है। और आप सोच रहे होंगे कि टॉपर एकलव्य का क्या हुआ। उसने सरकारी नौकरी छोड़ दी और अब समाजसेवा करता है, गरीबों और शोषित वर्ग के लोगों के हितों के लिए लड़ता है। उसे एहसास हो गया कि जिस पढ़ाई के लिए लोग लाखों रुपए खर्च करते हैं बड़े-बड़े संस्थानों में एडमिशन पाने के लिए तरसते हैं, वो केवल एक अंधी दौड़ की ओर ले जाती है जिसका कोई अंत नहीं है। और जो पढ़ाई उसने की है, वही सच्ची है जो सही मायनों में देश,समाज और दुनिया के काम आएगी।

(यह कहानी बिहार के सुप्रसिद्ध 'सुपर 30' से प्रेरित है।)

खुशियों के पल

रचना दत्ता

पुरानी दिल्ली में एक संयुक्त परिवार रहता था। लोग इस परिवार के आदर्श का उदाहरण दिया करते थे कि जहां आज के जमाने में न्यूक्लियर परिवार का चलन हो गया है और संयुक्त परिवार लगभग लुप्त हो गए हैं, वहां यह परिवार अभी भी एक साथ रहता है। इस परिवार में एक बुजुर्ग दंपत्ति, उनके दो बेटे-बहुएं और उन दोनो के दो-दो बच्चे रहते थे। पूरे मोहल्ले में इस बुजुर्ग दंपत्ति को लोग इज्जत से देखते थे और कहते थे कि जहां एक और जमीन-जायदाद के लिए भाई-भाई एक दूसरे के दुश्मन हो जाते हैं, वहीं इनके दोनो बेटे अभी भी एक मकान में एक साथ रहते हैं।

पर अंदर की कहानी कुछ और थी। दोनो भाई उस मकान को बेचना चाहते थे। उनके परिवार अब बड़े हो रहे थे और यह मकान में दोनो भाइयों को केवल एक-एक कमरा ही मिला हुआ था। उन्हे इस छोटी सी जगह में जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो रहा था। दोनो भाई चाहते तो अपनी-अपनी आय से कही ओर मकान खरीदकर आराम से रह सकते थे। पर वो यह सोचकर मकान नहीं छोड़ना चाहते थे कि एक भाई निकला तो दूसरा अपने आप इस मकान का मालिक बन जाएगा। और दोनों मे से कोई हर्गिज़ यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था। दोनो भाई बस यही सोचते रहते थे कि आखिर उनके खुशियों के पल कब आंएगे। घर का माहौल दिन-प्रतिदिन खराब हो रहा था, यह देखते हुए उनके पिता ने पूरे परिवार को बुलाया और कहा, बहुत दिनों से मेरा मन कर रहा है, कहीं बाहर घूमने का। चलो एक काम करते हैं, इस इतवार को मै आपको एक जगह घुमाने ले जाता हूं। ठीक है।

परिवार के बच्चे खुश हो गए। दोनों भाई और उनकी पत्नियां हैरानी में पड़ गई। 'पिताजी को अचानक यह क्या सूझी घुमाने की' बड़े भाई ने कहा। 'अरे भई, रिटायर हो गए है, पीएफ,ग्रेच्युटी आदि का पैसा पड़ा है, कहीं न कहीं तो खर्च करना ही है। वैसे इधर-उधर खर्च करने की बजाए हमें दें तो इसका बेहतर इस्तेमाल कर सकते हैं, छोटे बेटे ने कहा। 'वैसे, कहां ले जा रहे हैं? एक बहु ने पूछा। 'पता नहीं, बताया नहीं, यह तो इतवार को ही पता लगेगा, छोटी ने जवाब दिया। दोनो भाई के परिवार जो एक-दूसरे की शक्ल देखना भी पसंद नहीं करते थे, अचानक पिताजी की इस घोषणा के बाद पहली बार साथ बैठने लग गए थे। दोनो को लग रहा था कि पिताजी ने कुछ बोला है तो इसका कुछ खास मतलब ही होगा। शायद पिताजी घुमाने के बहाने दोनों भाईयों से बात कर इस मकान का सौदा कर देने को कहें। दोनों भाई तो इस मुद्दे को लेकर बैठक करने लगे कि अगर पिताजी मकान बेचने को तैयार हो गए तो दोनों भाई कितना कितना हिस्सा लेंगे। बड़ा बेटा अपने बड़े होने का हवाला देकर ज्यादा हिस्सा चाहता था तो छोटा अपना वेतन कम होने का तर्क देकर ज्यादा हिस्से की मांग पर अड़ा हुआ था। सहमति तो नहीं बनी दोनो भाईयों में पर फिर भी यह सोचकर कि चलो इसी बहाने कुछ तो मिलेगा, आने वाले इतवार का बेसब्री से इंतजार करने लगे। शनिवार की रात को पूरे परिवार ने बहुत साल बाद एक साथ खाना खाया। दानों बहुओं ने इकट्ठे खाना बनाया और सभी को परोसा। बहुत दिनों बाद इस परिवार में हंसी के ठहाके लगे थे। इस दृश्य को देखकर बुजुर्ग दंपत्ति की

आंखे भर आईं।

खैर, इतवार का दिन आ गया। सभी लोग सुबह जल्दी उठ गए और थोड़े समय के भीतर तैयार हो गए। पिताजी ने टैक्सी बुलाई और सबको एक स्थान पर ले गए। रास्ते में कई सुन्दर स्थान आए पर एक-एक कर पीछे निकलते रहे। सभी लोग हैरान हो रहे थे। कि शहर के सबसे लोकप्रिय सभी स्थान तो पीछे, रह गए अब ये हमें कहां ले जा रहे हैं। आखिरकार गाड़ी एक जगह रुकी,पूरा परिवार टैक्सी से बाहर उतरा तो सामने एक अनाथालय नज़र आ रहा था। जब परिवार अनाथालय के भीतर गया तो वहां कई सारे बच्चे थे। अनाथालय के बच्चों ने एक-एक कर पूरे परिवार के वयस्क लोगों के पैर छुए और मुस्कुराते हुए सभी को अंदर ले गए। वहां लगभग 40 बच्चे रहते थे जिनमें से कुछ नेत्रहीन थे और कुछ विकलांग। उन सभी बच्चों ने पूरे परिवार का ऐसा स्वागत किया मानो उनके घर में देवता आ गए हों। नेत्रहीन बच्चों मे से एक ने उन्हें बहुत ही मीठी आवाज़ में गाना सुनाया। कुछ देर बाद उन सभी को भोजन परोसा गया। भोजन वाकई बहुत स्वादिष्ट था। पूछने पर पता चला कि इनमें से कुछ बच्चों ने मिलकर भोजन बनाया है। काफी देर वक्त गुज़ारने के बाद पिताजी ने वहां के मैनेजर को कुछ रुपए दिए और पूरे परिवार ने वहां से विदा ली।

घर पहुंचकर पिताजी ने पूरे परिवार को बुलाया और कहा, 'आज तुम लोगों को बड़ा अजीब लगाा होगा जहां मै सभी को लेकर गया था। इस अनाथालय के साथ मै पिछले बीस साल से जुड़ा हुआ हूं और रिटायर होने से पहले हर महीने अपनी आय का कुछ हिस्सा यहां दान देता रहा। आज भी जब मौका मिलता वहां कुछ न कुछ देता रहता हूं। इस अनाथालय के बच्चों के लिए सिर्फ दो बड़े कमरे ही हैं। पर सभी लोग आराम से सोते हैं। जैसे कि तुम लोग बचपन में सोते थे जब हमारे रिश्तेदार हमारे घर मे रहने आते थे। याद है, तुम सभी बच्चे ड्राइंग रूम में एक साथ हंसी-मजाक कर और खेलते-खेलते सोते थे। इस अनाथालय में इतने अधिक लोग है पर सब लोग एक-दूसरे के लिए काम करते है। कोई खाना बनाता है, कोई कपड़े धोता है, कोई घर साफ करता है। ज्यादा लोग होना इनके लिए बोझ नहीं है बल्कि सारे काम बहुत जल्दी हो जाते हैं। अब तुम सोच रहें होंगे कि इस अनाथालय का गुज़ारा कैसे चलता है। मेरे जैसे कुछ लोग यहां नियमित रूप से दान करते हैं। ऐसे बहुत से बच्चे हैं। जो आज अच्छी-अच्छी जगह नौकरियां कर रहे हैं, कभी इस अनाथालय में रहने वाले बच्चों में से ही एक थे। वे हर हफ्ते यहां आते हैं। कुछ लेने नहीं बल्कि कुछ देने। यहां रहने वालों को यह गम नहीं है कि वे इतनी छोटी सी जगह मे रह रहे हैं व इसके लिए भी भगवान को धन्यवाद करते हैं। सच तो यह है कि जिस दिन हम हर हाल में खुश रहना सीख जाते हैं, हमें जिंदगी के मायने पता चल जाते हैं। मुझे पता है तुम दोनो यह मकान जल्द से जल्द बेचना चाहते हो, ताकि तुम्हे तुम्हारा हिस्सा मिल जाए और जाकर कहीं ओर अपना अपना मकान खरीद लो। पर कभी सोचा है कि तुम्हारे बूढ़े मां-बाप का क्या होगा? दोनो में से कोई एक रख तो लेगा पर बेमन से। मेरे बच्चों, सच्चा आनंद लेने मे नहीं, बल्कि देने मे है। तुम्हें शायद अभी मेरी बातें उपदेश लग रही होंगी पर जब मेरी उम्र में आओगे तो सब समझ जाओगे। खेर, मुझे अब कुछ नहीं कहना। तुम लोग किसी डीलर से मिलकर मकान बेचने की बात शुरू कर दो।

दोनो बेटों की आंख में आंसू भर गए। उन्होनें अपनी सोच के लिए पिता से माफी मांगी और मकान बेचने का विचार त्याग दिया। आज आज दोनों बेटो ने अपना-अपना मकान बना लिया है और वहां शिफ्ट हो गए हैं। मकान में अब केवल बुजुर्ग दंपत्ति रहते हैं। पूरा परिवार हर इतवार को अपने घर आकर मिलता है, हंसी के ठहाके लगते हैं, एक साथ खाना खाते हैं। और अब सभी को एहसास हो गया है कि जिन खुशियों के पलों का वो इतने समय से इंतज़ार कर रहे हैं, वो यही पल हैं।

काव्यधारा

हमारा भारत हमारी संस्कृति

गर्व से ऊँचा मस्तक मेरा,
हर पल रहूं ऋणी में तेरा,
भारत मेरा, भारत मेरा।
विकसित देशों की श्रेणी में,
भारत आगे बढ़ता जाए,
तभी तो प्यारा भारत मेरा,
विश्व अग्रणी कहलाए।
ऋषियों-मुनियों की पावन धरती,
सत्य-अहिंसा का पाठ पढ़ाती,
माता-पिता और गुरूजनों को,
ईश्वर से भी बड़ा बताती,
अतिथि देव है, विश्व कुटुम्ब है,
पूरी दुनिया को समझाए,
तभी तो प्यारा भारत मेरा,
विश्व अग्रणी कहलाए।
गीता का है ज्ञान यहां पर,
रामायण के संस्कार यहां पर,
वेद- ऋृचाओं, उपदेशों की,
गूंज सुनायी देती घर-घर
ज्ञान की अग्नि प्रज्जवलित कर
हम अंधकार को दूर भगाएं,
तभी तो प्यारा भारत मेरा,
विश्व अग्रणी कहलाए।
पावन पुण्य है धरती हमारी,
माता कहके बुलाते है,
रजमस्तक पर तिलक लगाकर,
कर्मवीर बन जाते हैं,
बाधांए हो शिखर सम जो,
कभी न फिर हम घबराएं,
तभी तो प्यारा भारत मेरा,
विश्व अग्रणी कहलाए।
कर्म पथ पर आगे बढ़ते,
कभी न फल की इच्छा करते,
देकर आहूति प्राणों की,
विजयश्री की रचना करते,
संघर्षो से खेलें हम तो,
मरूभूमि में क्षीर बहाएं,
तभी तो प्यारा भारत मेरा,
विश्व अग्रणी कहलाए।
नक्षत्रों की गणना की,
अंक गणित का ज्ञान दिया,
ध्यानयोग व नई विधाएं,
देकर जनकल्याण किया,
चरक संहिता, व्यामानिका,
अणु-अणु के सिद्धान्त बताएं,
तभी तो प्यारा भारत मेरा,
विश्व अग्रणी कहलाए।
सांख्यशास्त्र की रचना की,
व्याकरण भाषाओं का दिया,
बोद्ध-जैन और हिंदू धूर्म,
से मानवता का सार दिया।
आर्यभट्ट और रामानुज भी,
इसी पावन धरती से आए।
तभी तो प्यारा भारत मेरा,
विश्व अग्रणी कहलाए।
ईश्वर से है यही कामना,
कर जोड़ हम विनय सुनाएं,
पुनः पुनः इस पावन धरती,
पर हम आएं, हम आएं।

-सुनील कटारिया
(प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

जिदंगी के रंग

आओ देखो रंगो से,
कैसी बनी ये जिदंगी।
हरा हंसी के ताज का,
तो लाल रंग है लाज का।
सुनहरे लागे आंख के मोती,
तो पीली सी लागे, गुस्से में सूरत भोली।
नटखट नीला करे ठिठोली,
रंग प्यार का है गुलाबी।
काला रंग है कठिनाइयों का,
और रंग सफेद है सादगी का।
रंगो से बनी है जिदंगी,
रंगो से ही सजी जिदंगी।
रंगो की इस बारिश में,
चुन लो कोई भी रंग।
खिल उठेगी जिदंगी और,
महक उठेगा खुशियों का चमन

-ज्योति मठपाल

“सारा जग अपना है”

मन में यदि अपनत्व भरा है
तो यह सारा जग अपना है
भेद-भाव का मतभेद न हो
सच विश्वबंधुत्व का सपना हो
पृथ्वी कितना कुछ देती है
और कितना कुछ सहती है
सींचती जलधारा विश्ववृंद को
युग-युग से कलरव बहती है
यदि हम भी थोड़ा सहिष्णु हो जाएं
तो जीवन सुख की सुंदर कल्पना है
पुष्प ने सुरभि को किया कब
अपनी ही परिधि में सीमित
वर्षा की बूंदो ने बिखराए
व्योम पर इंद्रधनुष अगणित
यदि हम भी विस्तृत कर लें
विचारधारा
निश्चित ही जाति-धर्म का अंतर
मिटना है

-मधु जैन

“है मुर्दों का यह शहर ”

है मुर्दों का यह शहर यहाँ जिंदा भी
जलाए जाते हैं,
यहां भ्रष्ट-चापलूस अक्सर ही
परवान चढ़ाए जाते हैं,
है मुर्दों का यह शहर यहाँ.........।

जहाँ कोई न किसी की सुनता हो,
अपनी ही कहानी बुनता हो,
अभिव्यक्ति की न आज़ादी हो, मुहँ
खोलते बस अपराधी हों, जहां
ईमान-धर्म और लोक-लाज पर,
दाँव लगाए जाते हैं,
है मुर्दों का यह शहर यहाँ.......।

पानी ही बचा हो रगों में, हर-पल
जिंदगी सिसकती हो, जहां होता
कही अन्याय देख, छाती न तन्दूर
सी दहकती हो, जहां हंसो से भरे
शहर में भी, मोती कोए चुग जाते
हैं,
है मुर्दों का यह शहर यहाँ.......।

जहाँ चारो ओर अज्ञानता हो,
नर-नारी में घोर असमानता हो,
नीति-नियम- के नाम पे हर कोई,
गोरों की नीतियां ही जानता हो,
जहाँ सत्य-अहिंसा और धर्म, सूली
पे चढ़ाए जाते हैं,
है मुर्दों का यह शहर यहाँ..........।

जहाँ कर्मवीर बेचारे हों,
कुछ खास लोग ही प्यारे हों,
इन्साफ-न्याय के नाम पर,
बस दिवस मनाए जा रहे हों,
जहां कर्मठ-सच्चे लोग ही कुचले
और दबाए जाते है,
है मुर्दों का यह शहर यहाँ.........।

बीता समय हुआ युग अतीत,
अब इकजुट हो संग आना है,
परिवर्तन प्रकृति का नियम है,
बन प्रलय इन्हें बहा ले जाना है,
गलत जहाँ जब होता दिखे,
झंडा वहीं उठाना है,
बन किरण रोशनी की अब तुम्हे,
अंधियारे पर छा जाना है,
गर फूँकनी है जान इन मुर्दों में,
तो आज अभी यह काम करो,
अपने जीवन को ऐ यारों,
जनसघर्ष के नाम करो,
दबे-सताए लोगों के अधिकारों का
सम्मान करो,
मिल जाए जो उनको अपना हक
तब तक न आराम करो,

निस्वार्थ भाव से काम करें तो,
दुश्मन भी शीष झुकाएंगे,
इकजुठ हो ललकार करें मुर्दे
जीवित हो जाएंगे

-राकेश खुल्बे

दृढ़ इच्छा शक्ति

पुरुषोत्तम शर्मा

यदि वह हममें है, तो मनो विज्ञान की जानकारी निसदेंह हमारी सहायता करेगी बशर्ते की हम निदिष्ट साधनाओं का अभ्यास करे।

क्रियाओं, अभिरूचियों और विचार की कुछ आदतों के कारण हम मनोनिगृह में लगभग असम्भव को सम्भव बना लेते है। उनके संबंध में जान लेना हमारे लिए सहायक होगा, जिससे कि हम उनसे बच सकें।

1. यदि हममें तीव्र रूचि और अरूचि, राग और दुख हो, तो हम अपने मन का निग्रह करने में समर्थ नहीं होंगे।

2.यदि हम अनैतिक जीवन बिताये तो हम मन को नियत्रंण में नहीं ला सकेगें।

3. यदि हमे जान बूझकर दूसरों को हानि पहुंचाने की आदत हो तो हम अपने मन को वश में नहीं कर सकते।

4. यदि हम नशीली वस्तुओं का सेवन करते हों।

5. असंतुलित और अव्यवस्थित जीवन व्यतीत करते हों अर्थात् खाना,पीना, बोलना, सोना और काम करना। अति अल्प या अति अधिक मात्रा में करते हों तो हम नम का निग्रह करने में समर्थ नहीं होंगे।

6. यदि हम निरर्थक विवाद में पड़ने के आदि हों।

7. दूसरों के संबंध में जानने के लिए अनावश्यक रूप से उत्सुक हों।

8. दूसरों के दोष खोजने में अत्यंत तत्पर हों तो हम अपने मन को वश में नहीं कर सकेंगे।

9. यदि हम अनावश्यक रूप से अपने शरीर का यन्त्रण दें।

10. अर्थहीन खोजों में अपनी शक्ति खर्च करें।

11. अपने ऊपर कठोर मौन का व्रत बलपूर्वक लें।

12. अत्यंत आत्म केन्द्रित बन जाएं तो सहज ही मन को वश में करना हमारे लिए संभव होगा।

13. यदि हम अपने सामर्थ्य को न देखकर अधिक महत्वाकांक्षी हो।

14. दूसरों की सम्पति देखकर ईर्ष्या करते हों अथवा धर्माभिमानी हों तो अपने मन को सहज ही वश में नहीं कर सकते।

15. यदि हममे अपराध की भावना हो तो मन का निग्रह संभव न होगा। अतएव हमें मन से अपराध की समस्त भावना मिटा देनी चाहिए। हो चुके पापों के लिए पश्चाताप करना तथा भगवान से इच्छा शक्ति को दृढ़ बनाने की भावना करना ताकि फिर से पाप कर्म न हो, बस यही अपराध भावना को दूर करने का उपाय है। सफलता पाने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ-साथ हमारे भीतर आत्म विश्वास होना चाहिए।

श्री कृष्ण गीता में कहते हैं:- कि स्वंय को ही अपनी दुर्बलता दूर करनी चाहिए जो अपने मन को वश में लाना चाहता है, उसे इस उपदेश का पालन करना चाहिए। मन को मन के ही द्वारा नियंत्रण में लाना पड़ेगा। मनोनिग्रह में हम जिन कठिनाइयों का (सामना) अनुभव करते हैं वे सब हमारे अपने ही मन के द्वारा निर्मित होती हैं। मन को तनिक देर के लिए भी कृत्रिम उपायों के द्वारा वश में नहीं किया जा सकता उसके लिए तो धैर्य, अध्यवसाय, बुद्धिमता और परिश्रम पूर्वक उपयुक्त और परीक्षित साधनों मे लगना आवश्यक है।

यह स्पष्ट रूप से समझना और स्वीकार करना चाहिए कि ऐसा कोई जादू नहीं जिससे मन वश में हो जाय। जो लोग जल्दबाज हैं और ऐसी किसी कौशल की खोज में रहते हैं उन्हें सावधान कर देना चाहिए कि मन एक यंत्र है और उससे बड़ी सावधानी के

साथ व्यवहार करना चाहिए। मनोनिग्रह का समूचा कार्य हमें स्वयं ही करना होगा। इसे कोई दूसरा हमारे लिए नहीं कर सकता। हम कुछ फीस देकर दूसरों से इसे अपने लिए नहीं करा सकते। यह हमारा व्यक्तिगत कार्य है। इसे तो हम को स्वयं ही करना चाहिए। इस कार्य में हमें बड़े धैर्य की आवश्यकता होगी।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं:-

मन को क्रमश: और विधिपूर्वक वश में करना पड़ेगा। लगातार शनै: शनै: धैर्यपूर्वक संयम के द्वारा, इच्छा शक्ति को बलवती बनाना पड़ेगा। यह बच्चों का खिलवाड़ नहीं और न ही कोई सनक है कि उसमें पड़कर एक दिन अभ्यास किया जाए और दूसरे दिन त्याग दिया जाए। यह जीवन भर का काम है और लक्ष्य की सिद्धि में जो भी मूल्य चुकाना पड़े वह सर्वथा उचित है और वह लक्ष्य ईश्वर से अपने पूर्ण एकत्व के बोध जैसा महान है, यदि इसे लक्ष्य बनाया जाए और यदि यह ज्ञान रहे कि सफलता ध्रुव है, तो उसकी सिद्धि के लिए कोई मूल्य चुकाना अधिक नहीं हो सकता।

मनोनिग्रह के लिए अनूकुल भीतरी वातावरण बनाने की आवश्यकता। मनोनिग्रह की साधनाओं का अभ्यास करने के लिए हमें जीवन की कतिमय अपरिहार्य बातों को विवेकपूर्वक स्वीकार कर एक अनुकूल भीतरी वातावरण तैयार करना पड़ता है यदपि जो अपरिहार्य और अनिवार्य है तथापि हम उनकी ओर से अपनी आंखे मूंद लेते है। फल यह होता है कि आवश्यक रूप से मानसिक समस्या उठ खड़ी होती है। पर जो अपने मन को नियंत्रण में लाना चाहते है उन्हें सावधानी पूर्वक मन को अनावश्यक समस्याओं के भार से बचाना चाहिए क्योंकि परिहार्य और अनिवार्य समस्याओं का बोझ ही कुछ कम नहीं। इस संबंध में अगुंतर निकाय में बुद्ध द्वारा दिए गए निम्नलिखित उपदेश हमारे लिए पालनीय है।

भिक्षुओं में पांच उपदेश पुरूषों और स्त्रियों के द्वारा गृहस्थों और भिक्क्षुओं के द्वारा समान रूप से माननीय है।

1.किसी न किसी दिन वृद्धावस्था मुझ पर आयेगी और मैं उससे बच न सकूंगा।

2.किसी न किसी दिन मुझ पर रोग का आक्रमण हो सकता है और मैं उससे बच न सकूंगा।

3.किसी न किसी दिन मुझ पर मृत्यु का आक्रमण होगा और मैं बच न सकूंगा।

4.जिन वस्तुओं को मैं प्रिय समझता हूं वे परिवर्तनशील और नाशवान है तथा उनका मुझसे वियोग हो जाता है। मैं इसे अन्यथा नहीं कर सकता।

5.मैं अपने ही कर्मों का प्रतिफल हूं और मेरे कर्म भले हों या बुरे, मैं ही उनका उत्तरदायित्व बनूंगा।

भिक्षुओं,

1.वृद्धावस्था का विचार करने से यौवन का मद दूर किया जा सकता है या कम से कम न्यून किया जा सकता है।

2.रोग का विचार करने से स्वास्थ्य का मद दूर किया जा सकता है या कम से कम न्यून किया जा सकता है।

3.मृत्यु का विचार करने से जीवन का मद दूर किया जा सकता है या कम से कम न्यून किया जा सकता है।

4.समस्त प्रिय वस्तुओं के परिवर्तन और वियोग का विचार करने से अधिकार की लालसा दूर की जा सकती है या कम से कम न्यून किया जा सकता है।

5. तथा ये विचार करने से कि मैं अपने ही कर्मों का प्रतिफल हूं, विचार,वाणी और क्रिया की अशुभ प्रवृतियों को दूर किया जा सकता है या कम से कम न्यून किया जा सकता है।

इन पांच बातों पर विचार किया जा सकता है वह अपने अधंकार और वासना को दूर कर सकता है या कम से कम न्यून कर सकता है। और इस प्रकार निर्माण के मार्ग पर चलने में समर्थ हो सकता है। बुद्ध के इन उपदेशों का अभ्यास परोक्ष रूप से मन की शुद्धि में सहायक होगा।

टीसीआईएल में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन (पुरस्कृत आलेख)

भ्रष्टाचार की जड़ें हमारे समाज और प्रशासन में काफी गहराई तक जमी हुई हैं। यह एक ऐसी बुराई है जिसे जड़ से उखाड़ फेंकना बहुत जरूरी हो गया ताकि देश में स्पष्ट प्रशासन, पारदर्शिता तथा समृद्धि का संचार हो। हमारे देश को हमेशा से सोने की चिड़िया कहा जाता है और ये सच भी है, किंतु फिर भी यह काफी निराश करने वाली बात है कि देश की संपदा और स्त्रोतों का सही इस्तेमाल नहीं हो पाया है। इसलिए यह जरूरी है कि हम एकजुट होकर भले ही गुमनाम रूप से, भ्रष्टाचार का मुकाबला करें और उसे जड़ से मिटा दें।

जैसा कि विषय में ही निहित है कि भ्रष्टाचार से निपटने के श्रेष्ठ उपाय तो "शब्द निपटना" स्वंय ही हमें मुकाबले की ओर अग्रसर कर रहा है। यह मुकाबला आक्रामक भी हो सकता है और रक्षात्मक भी। अब तक हमने सतर्कता उपायों या कहें सतर्कता शक्तियों जैसे शिकायतें या भ्रष्टाचार के मामलों का पर्दाफाश करना आदि तरीकों से ही भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ाई लड़ी है पर जैसा कि डॉक्टर का कहना होता है कि किसी भी रोग से लड़ने के दो तरीके हैं या उससे अपनी रक्षा करके बचा जाए या उसका निवारण किया जाए और भ्रष्टाचार के मामले में भी यही बात सही सिद्ध होती है और इन दोनो तरीकों की व्याख्या नीचे विस्तार से की जा रही है:-

1. रक्षात्मक या निवारक उपाय- इस कार्य में तकनीक हमारे लिए एक अच्छा हथियार साबित हो सकती है जो हमारे जीवन में हर पहलू में एक संबल की तरह है। सरकार भी तकनीक के इस महत्त्व को समझ रही है। और संगठनों का कंपनियों में होने वाले कार्यों के नियंत्रण व निगरानी के लिए तकनीक का भलि-भांति उपयोग कर रही है। तकनीक एक मजबूत नियंत्रक के रूप में भ्रष्टाचार को कम करने के उपाय के रूप में उभर कर सामने आई है जिसके कई उदाहरण हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में देख सकते हैं।

■ **ई-गवर्नेंस-** इसने वस्तुओं व सेवाओं की खरीद को सरल व पारदर्शी तो बनाया ही है सबके लिए समुचित जानकारी को भी उपलब्ध कराया है। निविदाओं की संबधित कंपनियों की वेबसाईट पर होना आवश्यक कर दिया गया है ताकि सब उन्हें देख-परख कर बोली लगा सके। इस से अधिक से अधिक भागीदारी बढ़ती है और पक्षपात का खात्मा होता है।

■ **ई फाईलिंग/ ई आर पी-** यह एक ऐसी प्रणाली है जहां अधिकारी के उपलब्ध नहीं होने पर कार्य न करने का बहाना या किसी भी मानवीय गलती से या गलत इरादों की वजह से काम नहीं रुकेगा। ईफाईलिंग में कार्य करते समय कहीं भी भटकने पर जहां ये आपको डैशबोर्ड पर दिखाई देगा वहीं अलार्म के साथ चेतावनी भी देगा।

■ **ई- पेमैंट या भुगतान-** यह दुकानदारों और संगठनों के बीच समय पर भुगतान और लेन-देन होने से किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार की गुंजाइश नहीं रहती।

■ **बायोमिट्रिक प्रणाली या व्यवस्था-** यह सुनिश्चित करती है कि सभी अधिकारी समय पर कार्यालय पहुंचे और निश्चित समय पर या तक कार्यलय में उपस्थित रहें।

■ **जी पी एस-** यह अधिकारियों के वाहन की निगरानी को पूर्णत: सुनिश्चित करता है कि वे कहीं निर्दिष्ट मार्ग से परे तो नहीं चल रहे हैं।

बहुत से सार्वजनिक उपक्रम जैसे एच पी एल, ने अपने सारे पेट्रोल पंपों को इन्वेंट्री चैक् पर डाल दिया है ताकि किसी प्रकार की कोई मिलावट या बिलिंग में कोई गड़बड़ी न होने पाए।

बहुत से ऐसे उपाय हैं जिसमें हम तकनीक के माध्यम से ई-गवर्नेंस को अपनाते हुए भ्रष्टाचार से मुक्ति पा सकते हैं।

2. आक्रामक उपाय- या भ्रष्टाचार से निपटने के तरीके- इस उपाय की आवश्यकता तब पड़ती है जब कहीं पर किसी को भ्रष्टाचार में लिप्त पाया गया हो और सतर्कता अधिकारियों को मामले की तह तक पहुंच कर गलत लोगों को इसके लिए दंडित किया जाना है। इसके लिए सतर्कता आयोग अथवा संगठन के अंदर ही लोगों को निम्नलिखित उपायों का पालन करना चाहिए:-

- नियमित लेखा परीक्षा- किसी भी गलत कार्य को रोकने के लिए या भ्रष्टाचार के निवारण के लिए समय-समय पर संगठन के सतर्कता विभाग को लेखाओं की जांच करते रहना चाहिए और चल रही परियोजनाओं पर अपनी पूरी निगरानी रखनी चाहिए। सभी शेयरधारकों को वेबसाईट के माध्यम से संबधित जानकारी देते रहना चाहिए।

- सभी सरकारी परियोजनाओं की जानकारी और उनकी ताजा स्थिति से वेबसाईट के माध्यम से नियमित रूप से लोगों को अवगत कराते रहना चाहिए और सूचना अधिकार नामक यह हथियार भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक व्यापक उपाय सिद्ध हो सकता है। जब भी किसी व्यक्ति अथवा संगठन द्वारा भ्रष्टाचार के विरूद्ध कोई शिकायत दर्ज कराई जाती है तो उसकी समय पर समुचित रूप से जांच होनी चाहिए और उसके विषय में पूरी रिपोर्ट जारी की जानी चाहिए।

- भ्रष्टाचार के विरुद्ध ऑनलाइन शिकायत दर्ज किए जाने की व्यवस्था होनी चाहिए और शिकायत कराने वाले व्यक्ति के लिए यह सुविधा होनी चाहिए कि वे अपनी दर्ज करवाई गई शिकायत की स्थिति को जान सके।

- ध्यानाकर्षण अथवा व्हिसलब्लोअर व्यक्तियों की सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए और इस विषय में पूरी जानकारी कंपनी की वेबसाईट पर होनी चाहिए जिसका पूरा पालन भी किया जाना जरूरी है। सुविधा शिकायतकर्ता की गोपनीयता को प्रत्येक स्तर पर बनाए रखा जाना चाहिए।

- केवल एक व्यक्ति को दंडित करने से बात नहीं बनेगी क्योंकि जब भी कोई अपराध होता है तो उसमें बहुत से लोग शृंखलाबद्ध रूप से जुड़े होते हैं। तब यह जानना बहुत जरूरी हो जाता है कि किसी ने भी यदि कोई अपराध किया है तो क्यों किया है। अत: मामले की तह तक पहुंचना भी जरूरी है ताकि भविष्य में वह गलती दोबारा न दोहराई जा सके और उसके भीतर जो भी त्रुटियां है, उन्हें खोज कर दूर किया जाए और व्यवस्था दुरुस्त की जाए।

जैसा कि एक अर्थशास्त्री ने कहा है कि जितना मानवीय हस्तक्षेप कम होगा, उतना ही भ्रष्टाचार भी कम होगा। अत: हम तकनीक का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए भ्रष्टाचार की ओर जाने वाले सभी रास्तों को हमेशा के लिए बंद कर सकते हैं। हालांकि यह सत्य है कि मानव ने ही मशीनों का निर्माण किया है और जहां-तहां सारे सॉफ्टवेयर भी इसी मानवबुद्धि की ही देन हैं तो हमें इस मामले में भी पूर्णत: आश्वस्त होना होगा कि किसी भी कंपनी की महत्वपूर्ण परिसंपत्ति उसकी मानव क्षमता ही होती है, जो ईमानदार हो और नैतिक मूल्यों को समझती हो, तभी कोई भी संस्था या संगठन 100 प्रतिशत भ्रष्टाचार मुक्त हो पाएगा।

कही भी भ्रष्टाचार तभी पनपता है जब एक की बजाय बहुत सारे लोग उपभोग करने वाले हों। किसी भी संगठन या पूरे समाज को भी यदि देखा जाए तो किसी भी नैतिक मूल्यों का ह्रास तभी होता है जब मनुष्य की सतुंष्टि का स्तर ऊचा उठ जाता है और उसे मिली हर चीज कम लगने लगती है। कोई भी कर्मचारी या सामान्य मनुष्य अपने किए गए कार्य व उसके एवज में हुई प्राप्ति से सतुंष्ट होना चाहिए और इसके अतिरिक्त वह अपने भविष्य के संदर्भ में भी सुरक्षित महसूस करे तो फिर भ्रष्टाचार के लिए

समाज या संस्था के बीच कोई स्थान नहीं रही जाता। इससे होता यह है कि अपने दायरे के भीतर सतुंष्ट व्यक्ति समाज और देश की भलाई के विषयों मे भी सोचने लगता है। विदेशों की भांति भारत में भी सरकार को वरिष्ठ नागरिकों को उनकी आयु के अनुसार चिकित्सा व अन्य सुविधाएं देने के विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। जिससे सामाजिक सुरक्षा बढ़ती है और लोग भविष्य के प्रति अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं और इससे धन का संग्रहण या काले धन की समस्या का भी समाधान हो जाएगा।

इस तरह से हम यह कह सकते हैं कि तकनीक का सुरक्षित रूप से प्रयोग करते हुए राष्ट्र की समृद्धि में केवल अपनी इमानदारी से ही काफी हद तक सहयोग दे सकते हैं

-अमरजीत कौर

भ्रष्टाचार से निपटने के श्रेष्ठ उपाय

हमारे देश का सौभाग्य है कि यहां पर बहुत सी भाषाएं जानने वाले विभिन्न धर्मो व समुदायों के लोग रहते हैं और धर्म व समुदाय अपनी श्रेष्ठ मान्यताओं व नैतिक मूल्यों का पालन करता है इसके बावजूद भारत को खराब प्रशासन व्यवस्था के कारण भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था भ्रष्टाचार की इस बुराई मे बुरी तरह से जकड़ी हुई है और दुख की बात यह है कि प्रशासन व्यवस्था को संभालने वाले लोगों का ही इस बुराई को फैलाने में सबसे अधिक योगदान है। विभिन्न परियोजनाओं को दी जाने वाली बड़ी-बड़ी अनुदान राशियों का उपयोग कभी भी समुचित प्रकार से संबधित कार्य के लिए नहीं हो पाता और परिणामस्वरूप फायदे की बजाय नुकसान का मुहँ देखना पड़ता है और इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। इसके साथ ही, देशी-विदेशी आयात-निर्यात व्यापार पर लगाए जाने वाले करों की दिशा में भी यह हानिकारक है क्योंकि देश के भीतर सभी क्षेत्रों और राज्यों के बीच एक उचित व समान प्रवाह का नहीं होना देश को भ्रष्टाचार की खाई में धकेल रहा है।

विश्व के सामने एक शक्तिशाली देश के रूप में सामने आने के लिए हमें भ्रष्टाचार को काबू में करना होगा। मेरा यह मानना है कि, निम्नलिखित तरीकों से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा सकता है:-

1. सभी मत्रांलयों में एक अच्छी प्रशासन व्यवस्था को अपनाना और वही व्यवस्था सभी राज्यों के मत्रांलयों में स्थापित करना तथा कार्यप्रणाली को सही प्रकार से लागू करने से ही सही सुशासन की व्यवस्था व स्थापना होगी। मंत्राल्यों के लिए कार्यान्वित की जा रही सभी परियोजनाओं का समय सीमा के भीतर पूरा होना और आवंटित किए जा रहे धन पर नियंत्रण होना चाहिए और इस बात की पूरी जानकारी होनी चाहिए कि आंवटित की गई धन राशि का परियोजना कार्यों के लिए ही पूर्ण उपयोग किया जा रहा है तथा कोई परियोजना घाटे में नही जा रही है। इसके लिए जरूरी है कि संबधित मंत्रालय जिम्मेदारी के साथ परियोजना के विषय में पूरी जानकारी रखे।

2. उन लोगों के लिए कड़ी सजा का प्रावधान होना चाहिए जो लोग कार्य करने की बजाए रिश्वतखोरी में अधिक विश्वास करते हैं और देश की तरक्की में बाधा डालते हैं। सजा के बारे में सबको जानकारी हो और जो दोषी पाया जाए उसको अवश्य सज़ा दी जाए।

3. मुझे लगता है कि वे लोग जो देश के प्रति ईमानदार रह कर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए मुनाफा अर्जित कर रहे हैं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जिससे लोगों के बीच जागरूकता बढ़ेगी। इस देश में यदि लोगों को अच्छे वेतनमान दिए जाएं तो उन्हें रिश्वत लेने की कोई जरूरत ही नहीं होगी।

4. आम लोगों को इस प्रक्रिया से जोड़ना होगा जैसे उनके लिए प्रधानमंत्री द्वारा इ पी एफ परियोजना लागू की गई है इसके तहत व सभी कर्मचारी जो अपनी भविष्य निधि अर्जित कर रहे हैं वे उन सभी कंपनियों से यह हासिल कर सकेंगे जिनके साथ

उन्होने काम किया है। इस तरह से निगरानी और कार्यान्वयन की सहज प्रक्रिया से भ्रष्टाचार को कम किया जा सकता है। कुछ अन्य क्षेत्रों में जहां लोगों का अपने कार्यो के संबध में प्रशासन से सीधा वास्ता पड़ता वहां प्रक्रियाएं सहज और सामान्य होनी चाहिए। विभिन्न सुविधाओं के लिए ऑनलाइन पोर्टल से भी भ्रष्टाचार को नियंत्रित किया जा सकता है। इस तरह की बातें दूसरे लोगों को भी प्रेरित करती हैं कि वे इमानदार रहें और प्रशासन की सरल और व्यवस्थित प्रणाली को अपनाएं । भ्रष्टाचार को कम करने में यह एक अच्छा कदम साबित हो सकता है।

5. करों में कुछ कटौतियां की जाएं ताकि एक शहर से दूसरे शहर को जाने वाले ट्रासंपोर्टर भारी भरकम करों से बचें। पुलिस और दूसरे लोग जो उनसे टोल टैक्स के नाम पर भारी भरकम धनराशि वसूलते हैं उसके एवज में ट्रासंपोर्टर्स सभी नियमों को ताक पर रख कर सीमा से अधिक गति में अपने ट्रक व गाड़िया चलाते हैं और नियमों की धज्जियां उड़ाते हैं। इसलिए मानकों को लागू करने और नियमों का कड़ाई से पालन किए जाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, सर्विस टैक्स, कस्टमर उत्पाद शुल्क आदि कर भी भ्रष्टाचार का एक बड़ा कारण है। इसलिए मेरा सुझाव है कि इस मामले में ऑनलाइन प्रक्रिया को भी आसान और सुचारू बनाने की आवश्यकता है।

7. किसी भी प्रकार के बिल का भुगतान करने या टिकटें बुक करवाने के लिए बिचौलियों के प्रवेश पर पूरी तरह से रोक लगाई जानी चाहिए। और इस प्रक्रिया के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द 'ब्लैक' तो लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों जैसे गैस सिलेन्डर, रजिस्ट्री आदि जैसे कार्यो से पूरी तरह बाहर किया जाना चाहिए। घर या इमारत बनाने के लिए नक्शे आदि पास कराना या किसी भी अन्य इंफ्रस्ट्रक्चर के लिए लोगों को अतिरिक्त राशि देकर अपने काम करवाने पड़ते हैं और ये वे कार्य हैं जिनके लिए वहां बैठे लोगों की तैनाती की गई है और उन्हें इसके लिए ही सैलरी मिलती है। फिर भी वे लोग आम लोगों से अतिरिक्त राशि या रिश्वत लिए बिना कार्य नहीं करते। इसलिए सभी क्षेत्रों पर अंकुश होना बहुत जरूरी है।

अंत में, मै ये कहना चाहूंगी कि सारी प्रणाली में परिवर्तन लाने के लिए, ऊपर से लेकर नीचे तक प्रणाली का आधुनिकीकरण, प्रक्रिया का सही प्रवाह, कड़ी निगरानी बहुत आवश्यक है जिससे भ्रष्टाचार को कम करने में काफीं हद तक मदद मिल सकती है। मेरे ख्याल से यही वह समय है जब भारत से भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे। हमारे प्रधानमंत्री ने एक नया नजरिया हमारे सामने रखा है जिस से एक अच्छी प्रशासन व्यवस्था के लिए प्रणाली में परिवर्तन हो और नए रास्ते सामने आएं। मैं उनके विचारों की सराहना करती हूं कि उन्होनें दूसरे देशों में आवागमन के लिए वीज़ा प्रक्रिया को आसान बनाया और आई टी आर जमा करने के लिए ऑनलाईन प्रणाली की व्यवस्था करते हुए कुछ नई सुविधाएं व प्रक्रियाएं हमारे सामने रखी हैं ताकि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा सके। सभी क्षेत्रों में चलने वाली पासपोर्ट प्रक्रिया, बड़ी परियोजनाओं का कार्यान्वयन, पब्लिक डीलिंग, से निश्चित रूप से भ्रष्टाचार में कमी आएगी और उस पर अंकुश लगेगा। इस सबके परिणामस्वरूप ही हम आने वाले दशकों में भ्रष्टाचार मुक्त भारत कल्पना कर सकते हैं।

-चंचल पाठक

टीसीआईएल में होली पर्व पर हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

टीसीआईएल में होली पर्व के अवसर पर हास्य कवि सम्मेलन के आयोजन की परंपरा वर्षों से चली आ रही है। इस परंपरा का निर्वाह करते हुए टीसीआईएल में दिनांक 05-03-2015 को हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में प्रख्यात कवि श्री महेंद्र शर्मा, श्री चिराग जैन, श्री विनय विनम्र, श्री सत्यदेव हरियाणवी और श्री पी.के. आज़ाद ने भाग लिया। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि हमेशा की तरह इस बार भी टीसीआईएल हास्य कवि सम्मेलन यादगार बन गया। कार्यक्रम का संचालन श्री महेंद्र शर्मा ने किया। हास्य कविताओं के साथ-साथ बेटी विषय पर रचित कविता ने सभी श्रोताओं के दिल को छू लिया।

श्री महेंद्र शर्मा विगत कई वर्षो से टीसीआईएल के हास्य कवि सम्मेलन में शिरकत करते आए हैं। हर बार उनकी प्रस्तुति एक ताज़गी का एहसास दिलाती है। चिराग जैन जो कि विगत वर्ष भी टीसीआईएल के हास्य कवि सम्मेलन में भाग ले चुके है, की हास्य रचनाएं इस बार भी शानदार रहीं। कवियों ने कहा कि टीसीआईएल परिवार के कर्मचारियों का उत्साह उनमें हर बार नया जोश भर देता है और हास्य कवि सम्मेलन को लेकर जो अभिरूचि टी.सी.आई.एल परिवार व्यक्त करता है, वह अन्य दूसरे स्थानों पर विरले ही दिखाई देती है। अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक महोदय ने समस्त टीसीआईएल परिवार की ओर से सभी कवियों को उनकी रचनाओं के लिए बधाई दी और सम्मेलन को सफल बनाने के लिए आभार व्यक्त किया।

टीसीआईएल में स्वच्छता जागरूकता सप्ताह का आयोजन (पुरस्कृत आलेख)

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्दुः खभाग्भवेत्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

उपर्युक्त का अर्थ है कि सब सुखी रहें, सब निरोग रहें, सब लोगों के साथ भाग्य रहें, सभी दुख से दूर अच्छा जीवन जिएं, जिसमें शान्ति व सद्भावना हो। अब यह किस तरह से हो सकता है? स्वाभाविक है कि जब तक हमारे जीवन में स्वच्छता नहीं रहेगी, जीवन निरोग्य कैसे रहेगा? इसीलिए स्वच्छता को जीवन का अभिन्न अंग बनाना ही पड़ेगा।

अगर हम भारत में स्वच्छता की बात करें तो लगभग 5000 वर्ष पूर्व सिंधु सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता में स्वच्छता के जीवन जीने के प्रमाण मिले हैं। अतः हमारे देश और समाज में स्वच्छता पर ध्यान शुरू से ही दिया गया है। लेकिन जनसंख्या वृद्धि के साथ स्वच्छता में समाज बहुत पीछे छूठ गया। प्राचीन काल में ही नहीं, अग्रेंज़ो के जमाने में भी स्वच्छता के कारण कई घटनाएं घटीं जिसकी जानकारी बहुत कम लोगों को होगी। 1857 में सैनिक विद्रोह का एक छोटा सा कारण स्वच्छता भी था क्योंकि हमारे सैनिकों को अंग्रेज़ पर्याप्त सुविधाएं नहीं देते थे। थोड़ा आगे बढ़ें तो हम पाएंगे कि स्वामी विवेकानंद जी ने विश्व के कई देशों का दौरा किया और कहा कि भारत में भी नौजवानों को अपनी संस्कृति के साथ-साथ स्वच्छ भारत का निर्माण करना होगा। उन्होंने अपने कई लेखों में जापान जैसे देशों की स्वच्छता और सुंदरता का उल्लेख किया और कहा कि यदि हमें ऐसा बनना है तो हमें भी स्वच्छता को लेकर आंदोलन छेड़ना होगा।

अगर संवैधानिक दृष्टि से देखें तो स्वच्छता का विषय संविधान में राज्य की अनूसूची में छठे नंबर पर आता है तथा स्वच्छता को राज्यों के उत्तरदायित्व पर छोड़ा गया था। परंतु आज के समय में बहुत ही कम राज्य इस उत्तरदायित्व को निभा पाए। भारत सरकार ने अब यह काम अपने हाथ में लिया है और मुझे पूरा विश्वास है कि केंद्र सरकार को अपने इस काम में आशातीत सफलता मिलेगी।

टीसीआईएल की बात करें तो यहां पर सभी को जागरूक करके स्वच्छ टीसीआईएल की अवधारणा को सुनिश्चित किया जा सकता है। सीधी सी बात है कि टीसीआईएल की तरह यदि प्रत्येक कार्यालय, प्रत्येक संस्थान अपने परिसर, अपने क्षेत्रों को साफ रखें तो पूरा देश धीरे-धीरे इसी तरह से स्वच्छ होने लगेगा। बहुत बार ऐसा होता है कि कोई फाइल या महत्वपूर्ण दस्तावेज़ खो जाने पर इसका खामियाज़ा कंपनी को भुगतना पड़ता है। यदि सभी फाइलें, दस्तावेज़ व्यवस्थित रूप से रखे जाएंगे तो ऐसी समस्या नहीं आएगी। हमें टीसीआईएल में एक अनुवीक्षण समिति बनानी चाहिए जो समय-समय पर सभी तलों, वहां के कार्य स्टेशनों का दौरा करें। वहां की साफ-सफाई का निरीक्षण करें। इस संबंध में नियम बनाए और उन नियमों के कार्यन्वयन और पालन को सुनिश्चित करें। कागज़ों के उपयोग को न्यूनतम किया जाना चाहिए। जितनी कम फाइलें व दस्तावेज़ रहेंगे उनका रखरखाव करना उतना ही आसान हो जाएगा।

कंपनी के सभी कर्मचारी का यह दायित्व है कि वे अपने सामाजिक दायित्व को निभाएं। सीएसआर गतिविधियों में कंपनी के कर्मचारी की अधिक से अधिक भागीदारी को सुनिश्चित करना चाहिए। सीएसआर गतिविधियों का एक बड़ा हिस्सा देश में शौचालयों के निर्माण पर लगाया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि देश की एक बड़े स्तर की आबादी खुले में शौच करने को विवश है।

भारत सरकार ने सर्वप्रथम 1986 में ग्रामीण स्वच्छता अभियान की शुरूआत की थी जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि गांवों में लोगों को साफ पानी मिलें तथा उनके लिए रोज़गार के अधिक से अधिक अवसर पैदा हों। इसी मुहिम को आगे बढ़ाते हुए सन् 1999 में संपूर्ण स्वच्छता अभियान की शुरूआत की गई जिसके तहत हर राज्य, गांव, आंगनवाड़ी, स्कूल, कार्यालय की साफ-सफाई करने और जिला पचायंतों को साफ-सुथरा रखने का निर्णय लिया गया।

हाल ही में वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छता को जन आंदोलन बनाने की बात की गई है। सरकार ने आने वाले 5 वर्षों की योजनाओं के लिए 2 लाख करोड़ रु. का बजट रखा है जिसमें से 64 हज़ार करोड़ रु. शहरों की सफाई पर और 1 लाख 36 हज़ार करोड़ रु. गांवो की सफाई में लगाए जाएंगे। वर्ष 2019 तक इसे प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है और यदि हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं तो यह एक अभूतपूर्व उपलब्धि होगी।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के विश्व में 7 मिलियन लोगों में 6 मिलियन लोगों के पास मोबाइल फोन है किंतु 4.5 मिलियन के पास ही शौचालय की व्यवस्था है। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2022 तक सभी के लिए शौचालय की व्यवस्था का लक्ष्य रखा है।

सामाजिक उत्तरदायित्व समझकर हमें अपने चारों ओर स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना चाहिए। स्कूलों में हमें पाठ्क्रम में इस बात को शामिल करना होगा कि स्वच्छता हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। अगर हमें निरोगी रहना है तो साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना होगा। बच्चों को उनके कर्तव्यों का बोध जल्दी होता है। अत: बचपन से ही हमें उन्हें ऐसी बातें सिखानी होगी, जिससे आने वाली पीढ़ी, साफ-सफाई के प्रति सजग रहे और बच्चों के बेहतर भविष्य का निर्माण हो।

साफ-सफाई का केवल यह अर्थ नहीं है कि गंदगी को एकत्रित कर एक स्थान पर रखना। वेस्ट मैनेजमेंट पर भी ध्यान देना होगा। भारत अभी इस मामले में बहुत पीछे है जहां एक बड़े स्तर पर शहरों और उद्योगों से निकलने वाले कचरे को प्रबंधित किया जा सके। इस दिशा में विदेशी सहायता ली जा सकती है। तकनीक से न केवल कचरा प्रबंधन किया जा सकता है बल्कि रोजगार भी पैदा किया जा सकता है।

टीसीआईएल को भी अपने यहां कचरा प्रबंधन की तकनीकों को बढ़ावा देना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना होगा कि बेकार के कागज़ों व सामग्रियों का सहीं तरीके से निपटान हो ताकि इससे वातावरण भी दूषित न हो।

अस्वच्छता के कारण विश्व में हर वर्ष लगभग 50 लाख लोगों की मृत्यु होती है जिसमें से 90 प्रतिशत 5 वर्ष से कम आयु के बच्चे हैं। इनमें डायरिया से मरने वालों की संख्या सर्वाधिक है। लोगों को यदि अधिक से अधिक मात्रा में पीने के लिए साफ पानी उपलब्ध कराया जाएगा, इस तरह की बीमारियों में उतनी ही कमी आएगी।

भारत सरकार ने जो कदम उठाया है वह सराहनीय है क्योंकि स्वच्छता जितनी बढ़ेगी, बीमारियां उतनी ही कम होगी। देश के बहुत सारे पैसे की बचत होगी जिसे देशो के विकास में लगाया जा सकता है। केवल कूड़ा ही नहीं हमें जल और वायु को भी स्वच्छ रखना हैं। बच्चों की शिक्षा में स्वच्छता विषय को शामिल कर उन्हें इसका कर्तव्यबोध कराया जाना चाहिए। अंत में यही कहना चाहूँगा कि भारत अपना लक्ष्य वर्ष 2019 तक प्राप्त कर लेगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है। जो लोग इन कार्यों में जुटे हैं, उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करना होगा। विश्व में जो देश साफ-सुथरे हैं, वो विकसित देशों की श्रेणी में आते हैं। अत: हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि विकास का मार्ग स्वच्छता से ही आंरभ होता है।

गौरव सिंह चौहान
प्रथम पुरस्कार

स्वच्छ टीसीआईएल, स्वच्छ भारत

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि और यह अनुभव ही कर रहे है कि जब से श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत के प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया है, हम भारतवासियों में उनके अद्‌भुत नेतुत्व की क्षमता के कारण एक नई ऊर्जा शक्ति व आशा का संचार हो रहा है। प्रधानमंत्री महोदय द्वारा ऐसे विषय ध्यान में लाए जा रहे है जोकि देखने में भले ही छोटे लगते हों पर वास्तविकता के धरातल पर उनके परिणाम महत्वपूर्ण व दूरगामी है और प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करने वाले हैं।

प्रधानमंत्री महोदय द्वारा जनहित की दिशा में उठाए जा रहे कदमों में एक महत्वपूर्ण कदम है-स्वच्छ भारत अभियान। एक ऐसा विषयक्षेत्र जो हर स्तर के व्यक्ति की पंहुच में है, एक ऐसा विषय जो अत्यंत व्यापक है। स्वच्छ भारत के माध्यम से प्रधानमंत्री द्वारा आज की पीढ़ी को याद दिलाया जा रहा है कि महात्मा गांधी के दो स्वप्न थे। एक भारत की आजादी और दूसरा भारत को स्वच्छ रखना। गांधी जी का सपना था कि भारत की हर गली कूचा, गांव और शहर स्वच्छ दिखे। वर्ष 2019 में जब महात्मा गांधी की 150वीं जन्मशताब्दी होगी, उस वर्ष स्वच्छ भारत के इस मिशन को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है और मुझे पूरा विश्वास है कि हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

गांधी जी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर को इस मिशन की शुरूआत की गई। इस दिन हम सभी भारतवासियों ने यह प्रण किया कि हम अपने आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखेंगे। तो आज हम टीसीआईएल के कर्मचारी क्यों न इस

योजना की शुरूआत अपने टीसीआईएल से करें?

हमारा टीसीआईएल आज हमारी मेहनत व लगन से देशविदेश में अनेक प्रतिष्ठित-परियोजनाएं सपंन्न कर सम्मान प्राप्त कर रहा है। अनेक देशों के गणमान्य व्यक्ति परियोजनाओं के सिलसिले में टीसीआईएल का दौरा करते हैं और अपनी यात्रा के दौरान अनेक महत्वपूर्ण समझौते करते हैं और इन्हीं समझौतों के फलस्वरूप हमें मान और यश की प्राप्ति होती है। इस सबंध में यह हमारा कर्तव्य बन जाता है कि जो भी व्यक्ति चाहे वह देशी हो या विदेशी, टीसीआईएल भवन का दौरा करने के बाद एक सुखद अनुभूति लेकर जाए। कहते हैं न जहां स्वच्छता होती है, वहां भगवान बसते हैं। जैसे कि घर में यज्ञ, हवन आदि कराना हो तो पहले सफाई की जाती है और वातावरण को शुद्ध व निर्मल बनाया जाता है। स्वच्छ निर्मल, वातावरण में देवताओं का आह्वान किया जाता है ताकि स्वच्छ वातावरण से प्रसन्न होकर देवतागण अपने आशीर्वाद से हमें अनुग्रहित करे।

उसी प्रकार हमें टीसीआईएल को भी स्वच्छ रखना चाहिए ताकि प्रत्येक आगुंतक अपनी टीसीआईएल यात्रा से प्रसन्न होकर एक सुखद अनुभूति लेकर जाए और टीसीआईएल के व्यावसायिक या अन्य प्रकार से जुड़े रहने को लेकर उत्सुक रहे।

टीसीआईएल को स्वच्छ रखना हर कर्मचारी का कर्तव्य है। कर्मचारी को इसमें अपना योगदान देना है। हर कर्मचारी सुबह आते ही अपनी सीट कार्यस्थान की सफाई करे, यह सुनिश्चित करे कि वहां दिन में फाइलों या दस्तावेजो का ढेर नही लगेगा। फाइलें व्यवस्थित होनी चाहिए। जो फाइलें लबें समय से उपयोग में नहीं हैं, उनकी समुचित जांच करने के बाद उनका निपटान कर देना चाहिए। कार्यालयी मार्ग पर कूड़ा फैंकने वाले

लोगों पर सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। फिर भी अगर कोई कागज़ या अन्य अवांछित सामान कार्यालय स्थल के भीतरी मार्गों पर बिखरा पड़ा है तो हर कर्मचारी का यह दायित्व है कि उसका समुचित निपटान करे या उसे कूड़ेदान में फैंक दें। कार्यालय परिसर के भीतर पान या गुटखा खाने पर प्रतिबंध हो और चूंकि हमारे कार्यालय में प्रतिबंध लगाया गया है, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इस नियम का सख्ती से पालन हो रहा है। नियमों की अवहेलना करने वाले कर्मचारी को समुचित दंड दिया जाना चाहिए चाहे वह किसी भी स्तर पर कार्यरत क्यों न हो। ऐसे नियमों के समुचित कार्यान्वयन के साथ हम इस दिशा में आशातीत परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यालय का भवन अनुवीक्षण विभाग यह सुनिश्चित करे कि (रखरखाव) कार्यालय में लगे विभिन्न उपकरणों की समय-समय पर जांच व मरम्मत की जाती है।-टीसीआईएल में विगत कुछ वर्षो से ईआरपी प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है पर कागज़ों के प्रयोग में कोई विशेष कमी नहीं आई है। इस प्रकार प्रणालियों के प्रोत्साहित करते हुए यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कागज़ों का कम से कम उपयोग किया जा रहा है।

हमारा कार्यालय साफ-स्वच्छ होगा तो हमारा भारत भी स्वच्छ बनेगा। भारत तभी- उन्नति कर सकता है जब हम किसी भी कार्य को छोटा न समझ उसका व्यापक अर्थ में महत्व जानकर उस दिशा में कार्य करेंगे। जो विचार व संस्कार हम अपने कार्यालय में अपनाएंगे, वही विचार अपने सार्वजनिक जीवन में अपनाकर हम भारत उन्नत राष्ट्रों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर सकते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा ही होगा और हम सब मिलकर शीघ्र ही महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा कर लेंगे।

-सुनील कटारिया

बधाई

कुमारी शिल्पा शर्मा, सुपुत्री श्री अनिल शर्मा, एसीटी ने वर्ष 2014-2015 की केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित अपनी बारहवीं की परीक्षा में 81 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। उन्होंने राजनीति विज्ञान की परीक्षा में सर्वाधिक 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। कुमारी शिल्पा शर्मा को टीसीआईएल परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व सफल भविष्य के लिए अपार शुभकामनाएं।

कुमारी रिया सिंह, सुपुत्री श्री दिनेश कुमार पर्यवेक्षक ने वर्ष 2014-2015 की केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित अपनी बारहवीं की परीक्षा 87.2 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की। उन्होंने अंग्रेज़ी और जीव विज्ञान की परीक्षा में सर्वाधिक 93 प्रतिशत अंक प्राप्त किए । कुमारी रिया सिंह को टीसीआईएल परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व सफल भविष्य के लिए अपार शुभकामनाएं।

स्वच्छता के पीछे की गंदगी- क्या शर्मिंदा या गुस्सा होने से कोई फायदा है?

प्रख्यात लेखक कोएस्लर ने 1960 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ' द लोटस एंड द रोबोट' में लिखा था कि बंबई की गंध ऐसी है मानो कोई आदमी अपने सिर पर एक गंदा डाइपर बांधे घूम रहा है। चार साल बाद प्रख्यात लेखक वी.एस. नइपाल ने भी भारत की गंदगी के बारे में अपनी पुस्तक 'द एरिया ऑफ डार्कनेस' में लिखा है कि भारतीयों को खुलेआम शौच करने में कोई शर्म नहीं आती है। रेलवे ट्रैक के अलावा वे हर कहीं शौच करते देखे जा सकते हैं, बीच पर, पहाड़ियों पर, खुले मैदानों में और यहां तक कि नदी के किनारे भी। भारत में इन दोनो पुस्तकों को गंभीरता से लिया गया। और प्रतिबंध लग गया। ऊपर बताए गए कामों पर नहीं, इन दोनो पुस्तकों पर।

आज 55 वर्ष बाद 29 मई को न्यूर्याक टाइम्स के एक सवांददाता ने भी अपनी अखबार में कुछ ऐसा ही लिखा कि भारत के शहर, खासकर दिल्ली रहने लायक नहीं है और अपने बेटे के स्वास्थ्य को लेकर वे बहुत चिंतित है और इसीलिए वे यह शहर छोड़कर जा रहे हैं। खैर, आज के इंटरनेट युग में उनके आलेख पर प्रतिबंध लगाना तो संभव नहीं है। हां, सोशल मीडिया के ज़रिए भारतीयों द्वारा उनकी खूब खिंचाई की गई और भला-बुरा बोला गया। यह ठीक है कि कोई विदेशी हमारी आलोचना करे तो हम इसे संपूर्ण भारत का अपमान समझते हैं पर यह भी सच है कि सच्चाई से मुंह मोड़ना संभव है पर सच्चाई से मुंह मोड़ने के दुष्परिणामों से नहीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) का कहना है कि लगभग 10 करोड़ भारतीयों को पीने के लिए साफ पानी नहीं मिलता है। उनका यह भी कहना है कि खुले में शौच करने वाले दक्षिण

एशियाई लोगों की कुल संख्या में से 90 प्रतिशत भारत में रहते हैं जबकि विश्व में इसकी कुल संख्या में से 59 प्रतिशत लोग भारतीय है। केवल विश्व स्वास्थ्य संगठन ही नहीं, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने भी वर्ष 2011-12 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा था कि भारत के कुल जल संसाधनों मे से 60 प्रतिशत ऑर्गेनिक प्रदूषण की चपेट में हैं। स्वाभाविक है कि भारत के अधिकांश क्षेत्रो का सीवर वाला पानी, औद्योगिक कचरा और ऑर्गेनिक कचरा नदियों और तालाबों में डाला जाता है। औद्योगिक कचरा तो हर घंटे इन नदियों और जलाशयों में गिरता है जिसके चलते यह पानी अत्यंत खतरनाक स्थिति पर पहुंच चुका है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अपनी रिपोर्ट में यह भी लिखा है कि किस प्रकार न्यून क्षमता वाले सीवेज ट्रीटमेंट संयत्र गंदगी को नदियों में प्रवाहित कर देते हैं।

वायु प्रदूषण के मामले में तो स्थिति और भी बुरी है। महानगरों की कुल संख्या में 79 प्रतिशत में वातावरण में नाइट्रोजन ऑक्साइड की मात्रा बहुत उच्च स्तर पर पाई गई है। उल्लेखनीय है कि वायु प्रदूषण का सबसे प्रमुख कारण नाइट्रोजन ऑक्साइड ही है। दिल्ली मे तो ऐसी प्रदूषित गैसों की मात्रा अत्यंत गंभीर स्तर पर पहुंच चुकी है। सच्चाई तो यह है कि शहरी भारत का अधिकांश इलाका कचरे और गंदगी से घिरा हुआ है।

क्या प्रधानमंत्री का स्वच्छ भारत अभियान कोई बदलाव ला सकता है?

आलंकारिक रूप से तो इस प्रकार के अभियान को एक अच्छा प्रयास माना जा सकता है किंतु गंदगी की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि ऊपरी स्तर पर सफाई किए जाने से ऐसे अभियानों का प्रभाव नगण्य ही रहेगा। भारत की आबादी का अधिकांश हिस्सा यहां के 53 शहरों में बसा हुआ है। यहां के लोगों को एक ठोस सिविल अवसंरचना प्रदान करना सरकार के लिए सबसे कठिन चुनौती है। फिलहाल तो इसका अभाव है और इसके अभाव में सीवर की गंदगी लगातार नदियों, झीलों और तालाबों को दूषित कर रही है। यदि बड़े स्तर पर कृषि और ग्रामीण रोज़गार को पैदा न किया गया तो स्थिति बद से बद्तर हो जाएगी।

लोग खुले में शौच करने को विवश हैं। सरकार को सभी के लिए शौचालय की व्यवस्था किए जाने क कार्य को एक मिशन समझ कर उसे जल्द से जल्द पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। नदियों और औद्योगिक कचरा फैंके जाने पर प्रतिबंध तो लगाया जाता है पर इसका सख्ती से पालन नहीं हो पा रहा। संभवतः कुछ औद्योगिकी घराने इस कदर प्रभावशाली हो गए है कि ये नियम उनके समक्ष प्रभावहीन लगने लगते है। इसी प्रकार

वायु प्रदूषण से निपटने के भी यदि गंभीर प्रयास करने है तो हमें शहरों में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को दुरूस्त करना होगा, सीएनजी, एलपीजी जैसी वैकल्पिक गैसों और बेटरी से चलने वाले वाहनों के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ावा देना होगा, भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था न होने के कारण लोग अपने निजी वाहनों का अधिक से अधिक इस्तेमाल करते हैं जिसके चलते वायु प्रदूषण बढ़ता है।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है यह कि इन सभी को स्थानीय स्तर पर प्रंबधित किए जाने की आवश्यकता है। कुछ राज्यों में प्रशासन और राजनीतिक प्राथमिकताओं के अत्यंत खराब स्तर को देखते हुए कार्य वाकई एक बहुत बड़ी चुनौती है।

अंत में, एक बात हम सभी को अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि भारत की गंदगी इसकी सभी बुराइयों और कुरितियों जैसे कि गरीबी, असमानता, जाति प्रथा, भ्रष्टाचार, खराब विकास नीतियों और जल्दी अमीर होने की लालसा। प्रश्न यहां सुंदरता का नहीं है बल्कि मूलभूत सामाजिक परिवर्तन का है।

(साभार-www.firstpost.com)

परिवर्तन प्रबंधन

पूजा कांडपाल सिंह

श्रीमद् भागवतगीता में लिखा है कि परिवर्तन संसार का नियम है। और इन परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को ढालना हमारे लिए अनिवार्य नहीं बल्कि बाध्यकारी भी है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में जहां चीजें बहुत तेजी से बदलती हैं और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जब तक हम किसी एक विषयक्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं वह पुरानी और अप्रचलित होने लगती है शायद यही कारण है कि प्रबंधन के क्षेत्र में भी इस अवधारणा को समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है । मै 'चेंज मैनेजमेंट' के क्षेत्र में कार्यरत हूं। इस क्षेत्र में काम करते हुए मैं यह जानती हूं कि बहुत कम लोग ही इस अवधारणा से अवगत हैं। सबसे पहले तो इसका अर्थ समझते हैं और यह जानने का प्रयास करते हैं कि किसी संगठन या किसी परियोजना को यह किस प्रकार प्रभावित करता है।

जब हम परिवर्तन की बात करते हैं तो इस क्षेत्र में यह परिवर्तन प्रबंधन मुख्य रूप से निम्नलिखित बिंदुओं को प्रभावित करता है :-

1. **प्रक्रिया**
2. **प्रणालियां**
3. **संगठनात्मक संरचना**
4. **रोजगार भूमिका**

किसी भी संगठन/ परियोजना/ विभाग के भीतर काम करते हुए विभिन्न प्रकार की व्यवहारिक या सैद्धांतिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जो नियम या सूत्र हम किसी एक समस्या के समाधान के लिए उपयोग करते आए हैं अब वो दूसरी प्रकार की समस्याओं के लिए बिल्कुल कारगर नहीं रहे हैं। यही कारण है कि अपने कार्य करने की प्रकृति को निरंतर परिवर्तित करते रहना आज के समय की मांग है।

इसी परिवर्तन के माध्यम से ही हम बाजार में प्रतिस्पर्धा में बने रह सकते हैं अपने उपभोक्ताओं के और निकट आ सकते हैं और अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं। परिवर्तन प्रबंधन की सीधी-सरल परिभाषा यही है।

सरल शब्दों में कहें तो परिवर्तन प्रबंधन कर्मियों को परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने में सक्षम करता है और उसे निरंतर प्रगतिशील व प्रवर्त्तनकारी बनाए रखता है। इससे न केवल उनके ज्ञान में वृद्धि होती है बल्कि समस्या से निपटने को लेकर उनकी सोच पहले से व्यवहारिक भी हो जाती है।

परिवर्तन प्रबंधन की अवधारणा को मैं अपने एक अनुभव के साथ और भी सरल ढंग से प्रतिपादित करना चाहती हूं।

परिवर्तन किसी व्यक्ति / संगठन / परियोजना को आगे बढ़ने और निरंतर विकास करने में सक्षम बनाता है। कुछ दिनों पहले राज्य पुलिस के अधिकारियों के साथ हमने एक कार्य अभ्यास किया।

परिवर्तन का प्रभाव सर्वोच्च प्रबंधन से प्रारंभ होता है।

जैसे ही प्रतिभागियों ने कक्ष में प्रवेश किया हमने उन्हें अपने सहजता के दायरे से बाहर निकालने का प्रयास किया। लोग जैसे-जैसे अंदर प्रवेश करते गए, हमने उन्हें कहा कि वे अपना मोबाइल नंबर एक कागज़ पर लिखते जाएं। (उन्होंने हमसे जानना चाहा कि हम ऐसा क्यों कर रहें हैं पर हमने उन्हें कुछ नहीं बताया और पॉवरपाइंट स्लाइड की ओर देखने के लिए कहा।

जब वहां अधिकांश प्रतिभागी पहुंच चुके थे तो हमने अपनी प्रक्रिया प्रारंभ की। हमने मोबाइल्स फोन रैंडम तरीके से एक-एक करके उन लोगों को देने शुरू किए और सबको कहा कि फोन

अपने पास रखें। उन्होनें हमसे फिर जानना चाहा कि यह सब क्या हो रहा है पर हमने कुछ नहीं बताया और उनकी जिज्ञासा बढ़ने दी।

अब हमने लिस्ट में से एक-एक करके फोन नबंर डायल किए। जिसका नबंर डायल होता था और फोन बजता था, उस फोन को रखने वाला व्यक्ति अपना परिचय देता था। फिर हम उसे कहते थे कि वह परियोजना के बारे में कोई एक बात बताए और हम उसे फ्लिपचार्ट पर लिखने लगे।

फिर हमने उस व्यक्ति को कहा कि लिस्ट में से कोई नबंर चुने और डायल करे। फिर जिसका फोन बजता था उससे हम यही कार्य कराते थे। इसी तरह हमने सत्र जारी रखा। फिर फोन का असली स्वामी अपना फोन पहचानता था और उसे रख लेता था यह सत्र आधे घंटे तक चला और इस दौरान हमने कुछ महत्वपूर्ण बाते देखीं।

1. अधिकारी इस प्रकार के नए वातावरण और ऐसी नई गतिविधियों में असहज थे।

2. उन्हें दूसरों का फोन चलाने में मुश्किल हो रही थी। उन्हें डर था कि वे कही गलत कमांड न दबा दें। जबकि एक बात हम भी जानते है कि ऑपरेट करने में सभी फोन लगभग एक जैसे ही होते हैं।

3.कार्यशाला से पहले और इसके बाद के समय में उनका व्यवहार और ज्ञान भिन्न था।

अब देखिए, कि परिवर्तन प्रबंधन यहां किस प्रकार काम करता है:-

1. इस प्रकार की कार्यशाला में उन्हें एक अलग सी परिस्थिति में काम करने और उसके अनुरूप स्वयं को ढालने का प्रशिक्षण मिलता है। सरल शब्दों में जब आप अपने सहजता के दायरे से बाहर आ जाते हैं तो आप स्वतंत्र अनुभव करने लगते हैं।

2. उन्हें एक मंच पर अपनी अलग-अलग तरह की समस्याओं पर चर्चा करने और उसका एक व्यवहारिक समाधान निकालने की शक्ति मिलती है।

3.उन्हें प्रशिक्षण का महत्व पता लगता है और वे समझ पाते हैं कि एक साथ मिलकर काम करने से समस्या से बेहतर ढंग से निपटा जा सकता है।

परिवर्तन प्रबंधन की आवश्यकता

परिवर्तन प्रबंधन की आवश्यकता है क्योंकि

1. हम किसी कारण से परिवर्तन करते है।

2. संगठनात्मक/ परियोजना परिवर्तन को व्यक्तिगत परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

3. संगठनात्मक/ परियोजना में मिलने वाले सकारात्मक परिणामों का मूल कारण व्यक्तिगत स्तर पर हुए परिवर्तन ही होते हैं।

4. लोगों के कार्य व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन से संगठन का विकास होना परिवर्तन प्रबंधन का मूल ध्येय है।

नीचे चित्र देखें। क्या यह किसी कंकाल का सिर है या फिर कोई महिला दर्पण के आगे बैठी है?

अपराध की दुनिया की बात करें तो क्या कभी हमने अपराधियों की मनोवृत्ति को समझने की कोशिश की है? क्या आपको नहीं लगता है कि जिस प्रकार हम अपनी आजीविका के लिए काम करते हैं, अपराधी अपनी आजीविका के लिए अपराध करते हैं? अपने अपराध करने के तरीकों में

लगातार परिवर्तन लाते रहते हैं, नई तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि अपराध करने के उनके तरीके धीरे-धीरे पुराने पड़ने लगते हैं और पुलिस को यदि उन्हें चकमा देना है तो अपने काम करने के तरीकों को लगातार बदलना ही होगा। इसी प्रकार पुलिस को भी अपनी कार्यशैली में निरंतर परिवर्तन लाते हुए नित नई तकनीकों मे विशेषज्ञ होना पड़ता है। नहीं तो अपराधी उन पर हावी होने लगेंगे। तो एक तरह से देखा जाए तो परिवर्तन,जो कि प्रकृति का नियम है उसे हमें गंभीरता से लेना ही पड़ता है ताकि बुराई कभी अच्छाई पर हावी न हो पाए और विकास की गति न रुके।

समय के परिवर्तन के साथ लोगों का प्रबंधन कैसे करे?

जब कप्तान या प्रबंधन परिवर्तन को प्रबंधित करते हुए कार्य की योजना बनाते हैं तो वे निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांतों पर काम करते हैं

1. परिवर्तन को लेकर भिन्न लोगों का व्यवहार भिन्न होता है।

2. हर किसी की मूलभूत जरूरतें होती हैं जिन्हें पूरा किया जाना ही चाहिए।

3. परिवर्तन के कारण अक्सर नुक्सान भी होता है और लोगों को लॉस कर्व (हानि वक्र रेखा) से होकर गुज़रना पड़ता है।

4. लोगों की उम्मीदों को व्यवहारिक तौर पर पूरा करने का प्रयास होना चाहिए।

5. डर का सामना करना ही होगा।

6. इस रास्ते में कोई आसान समाधान नहीं है।

7. परिवर्तन के अनुकूल क्षमता होनी चाहिए।

8. परिवर्तन अकेले नहीं किया जा सकता है। यह टीमवर्क है और कुशल नेतुत्व में ही होता है।

9. कार्यसंस्कृति का ध्यान रखें।

10. विचारों का आदान-प्रदान अवश्य हो।

कुछ लोग रोशनी की किरण देखकर बदलते है और कुछ उसकी ऊष्मा को अनुभव करने के बाद। तो पहले अपने आप को समझाएं कि मै बदलने के लिए तैयार हूं और अपना दायरा खुद ही तय करूंगा ।

यह विषय क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसे कुछ शब्दों में समेटा नहीं जा सकता है। पत्रिका के अगले अंक में इस विषय पर कुछ और चर्चा करेंगें। तब तक के लिए अपने सहजता के दायरे से बाहर आइए, बदलें और बदलाव लाएं।

टी.सी.आई.एल में महाप्रबधंक पद पर कार्यरत श्री सुनील कुमार ने नई दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में आयोजित कॉरपोरेट बैडमिन्टन प्रतियोगिता में रनर-अप स्थान प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि इस प्रतियोगिता में ई.आई.एल, एक्सिस बैंक, आई.सी.आई.सी.आई बैंक जैसी 60 से अधिक कम्पनियों के प्रतिभागियों ने भाग लिया । श्री सुनील कुमार को टी.सी.आई.एल परिवार की ओर से बधाई ।

टीसीआईएल में हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजन

वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार
श्रीमती नीना महाजन को मिला।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार
सुश्री रीना गुप्ता को दिया गया।

हिंदी आशु-काव्य सृजन प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार
श्री सुनील कटारिया को प्राप्त हुआ।

हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार श्री सत्यनारायण को मिला। उल्लेखनीय है कि यह प्रतियोगिता विशेष रूप से अहिंदी भाषी प्रतिभागियों के लिए आयोजित की गई थी।

कहानी बुनो प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार
सुश्री अतिथि राय विरमानी ने जीता।

हिंदी आशु-काव्य सृजन प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार
सुश्री चंचल पाठक ने जीता।

“प्रकृति के लिए,
प्रकृति की गोद में,

बैठा एक दिन मैं लिखने के लिए,
सामने एक अद्भुद नज़ारा था,
कितना सुन्दर कितना प्यारा था,
लिखने के लिए शब्द,
जैसे ही मैंने कलम उठाई,
सामने एक परछाई सी पड़ती है दिखाई,
कंकाल के सामने वह प्राणी,
मुर्दो ही की जाति का लगता था,
हरी भरी इस जन्नत के बीच,
काला धब्बा सा मालूम पड़ता था,
बदरंग किस्म का वह बदरूप,
कुरूपों में उच्च लगता था,
श्याम देह झुकी कमर वाला वह,
इस जीवन पर बोझ लगता था,
शिकवे थे जिसे बहुत,
मेरी इस प्रकृति से,
शायद इसकी सुन्दरता में,
वह विलीन हो जाना चाहता था”

-प्रशांत सिंह

टीसीआईएल को दिनांक 27 अप्रैल 2015 को नई दिल्ली में ‘न्यूज़ इंक लेजेंड पीएसयू शाइनिंग अवार्ड’ से सम्मानित किया गया। टीसीआईएल को यह सम्मान वैश्विक स्तर पर अपने व्यवसाय के विस्तार के लिए दिया गया।

टीसीआईएल की सेवाओं से निवृत कर्मचारी (जनवरी से जून 2015)

श्री आर के चतरथ	महाप्रबंधक	दिनांक 31-01-2015
श्री गुरमीत सिंह	संयुक्त महाप्रबंधक	दिनांक 28-02-2015
श्री महाराज सिंह	वरि. पर्यवेक्षक	दिनांक 31-03-2015
श्री कंवल कृष्ण	समूह महाप्रबंधक	दिनांक 31-03-2015
श्री ए.के दुग्गल	कार्यपालक निदेशक	दिनांक 31-03-2015
श्री एस.सी.भारद्वाज	वरि. पर्यवेक्षक	दिनांक 30-04-2015
श्री पुरुषोत्तम शर्मा	महाप्रबंधक	दिनांक 31-05-2015
श्री के.सेल्वा कुमार	समूह महाप्रबंधक	दिनांक 30-06-2015
श्री आनंद कुमार	सहायक प्रबंधक	दिनांक 30-06-2015

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

टीसीआईएल में गांधी जयन्ती के शुभ अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान शुभारंभ किया गया। माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा वर्ष 2019 तक संपूर्ण भारत को स्वच्छ बनाने का जो संकल्प किया गया है, टीसीआईएल उसके लिए अपना हर संभव योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है और टीसीआईएल कर्मचारी बड़े जोश और उत्साह के साथ स्वच्छता गतिविधियों में भाग ले रहे हैं।

चित्र समाचार

आयकर विभाग, वित्त मंत्रालय–भारत सरकार के शाहजहांपुर (उत्तर–प्रदेश) में कार्यालय एवं आवासीय परिसर हेतु प्रस्तावित भवन का निर्माण कार्य जो कि टी.सी.आई.एल. लखनऊ के द्वारा किया जाना है, का शिलान्यास दिनांक 27/05/2015 को किया गया। इस अवसर पर माननीय श्री रणंजय सिंह, आई.आर.एस. मुख्य आयकर आयुक्त, श्री के.सी.मीणा. संयुक्त, आयकर आयुक्त, बरेली व श्री अतुल कुमार जैन, परियोजना निदेशक, टी.सी.आई.एल. उपस्थित थे।

टीसीआईएल की रक्षा परियोजना के तहत देहरादून, उत्तराखंड में चल रहे कार्य का निरीक्षण करते हुए टीसीआईएल महाप्रबंधक एवं अन्य स्टाफ।